Navaagat
नवागत
2018-19

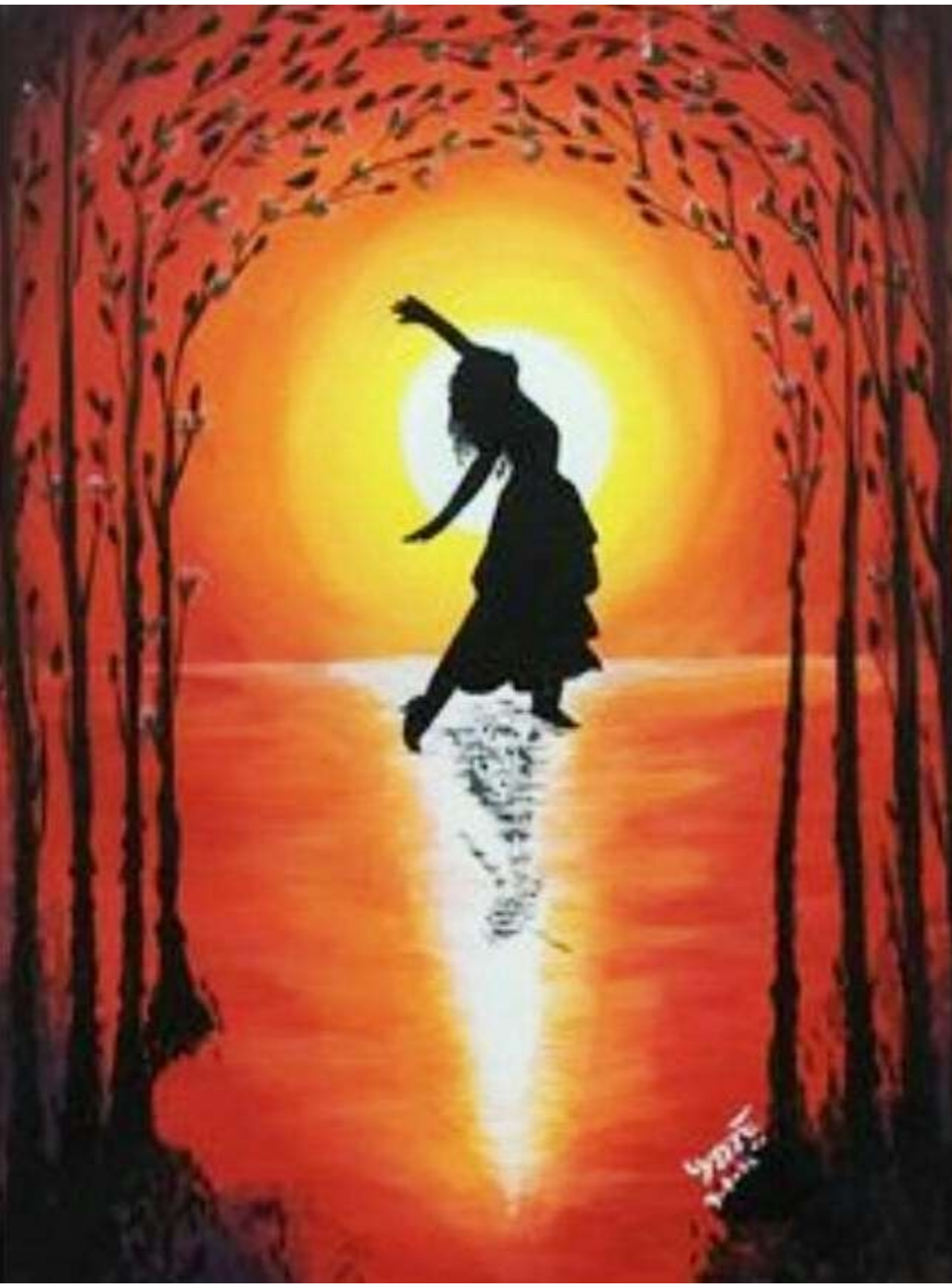

नवागत

NAVAAGAT

Patron	:	Dr. Suraj Bhan Bhardwaj
Editorial Board	:	Dr. Shrivatsa Shastri Ms. Anupam Goel Dr. Anil Kumar Dr. Bhaskar Lal Karn Dr. Parumita Ghosh Dr. Mukesh Kumar Dr. Brahm Dutt Dr. Ritu Kathuria (Convener)
Student Editors	:	Ankesh Singh Shivani Shubham
Designing & Printing	:	Saran International Offset Ph. : +91 9818770735 Email: saranoffset@yahoo.com
Cover Painting		Edited by Kumar Shashank, *B.A. (H) History, III Yr*
Image Sources		Bhaskar, Kumar Shashank and Internet

Motilal Nehru College

(University of Delhi)

Benito Juarez Marg, New Delhi - 110021

FORM IV

For Publication of Periodicals

1.	Title of the Magazine	:	Navaagat
2.	Periodicity of Publications	:	Annual
3.	Name of the Publisher	:	Dr. Suraj Bhan Bhardwaj, Acting Principal
	Nationality	:	Indian
	Address	:	Motilal Nehru College, New Delhi
4.	Place of Publication	:	Motilal Nehru College, New Delhi
5.	Name of the Printer	:	Saran International
	Nationality	:	Indian
	Address	:	
6.	Name of the Chief Editor	:	Dr. Ritu Kathuria
	Nationality	:	Indian
	Address	:	Motilal Nehru College, New Delhi

I, Suraj Bhan Bhardwaj, do hereby declare that the particulars given above are true to the best of my knowledge and belief.

April, 2019

Message from the Chairman

मोतीलाल नेहरू महाविद्यालय से मेरा एक विशेष लगाव रहा है क्योंकि मैंने एक छात्र के रूप में यहाँ से शिक्षा ग्रहण की है। संयोगवश मुझे महाविद्यालय में दो बार शासी निकाय का अध्यक्ष बनने का मौका मिला। इसलिए यह कर्त्तव्य बनता था कि मैं अपने महाविद्यालय के लिए कुछ विशेष कार्य करूँ। मुझे इस बात की बेहद खुशी है कि मैंने विद्यार्थियों की ज़रूरतों को ध्यान में रखते हुए उनकी सभी सुविधायें पूरी करने की कोशिश की। हर्ष है कि हम इसमें यथासंभव सफल भी हुए। मेरा उद्देश्य रहा है कि मोतीलाल नेहरू कॉलेज का नाम दिल्ली विश्वविद्यालय के श्रेष्ठ कॉलेजों में गिना जाये। साथ ही यहाँ के विद्यार्थी देश और विदेशों में उच्च शिक्षा ग्रहण कर बेहतरीन भविष्य बनाने और देश के विकास में एक सकारात्मक योगदान देने में समर्थ हो सके। इस संदर्भ में मैंने शैक्षणिक वातावरण को और बेहतर बनाने एवं आपसी पारस्परिकता को समृद्ध करने पर बल दिया। मुझे उम्मीद है कि इस प्रयास को अनवरत जारी रखा जाएगा। महाविद्यालय से प्रतिवर्ष प्रकाशित होने वाली 'नवागत' पत्रिका इसी प्रयास का एक अंग है। इस वर्ष समय पर प्रकाशित कर पाने के लिए मैं पत्रिका के सम्पादक मण्डल को हार्दिक बधाई देता हूँ।

खेमचन्द जागिरदार
अध्यक्ष, शासी निकाय

Message from the Principal's Desk

मुझे बहुत खुशी की अनुभूति हो रही है कि हमारे महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका 'नवागत' हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी प्रकाशित हो रही है। इस पत्रिका में प्राध्यापकों एवं विद्यार्थियों के कई ऐसे गंभीर लेख हैं जो देश और दुनियाँ के अनेक पहलुओं पर हमारी समझ को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करेंगे। इस रूप में पत्रिका की महत्ता एवं उपयोगिता और अधिक बढ़ जाती है। पत्रिका विद्यार्थियों में अच्छे–अच्छे लेख लिखने की प्रवृत्ति को आगे बढ़ाती है। महाविद्यालय में उच्च शिक्षा से हमारा उद्देश्य विद्यार्थियों को एक बेहतरीन इंसान और नागरिक बनाना है जो धर्म, नस्ल, रंगभेद, क्षेत्रवाद, सम्प्रदाय व जाति की दीवारों से बाहर निकलकर राष्ट्र निर्माण में साकारात्मक भूमिका निभा सके। इस उद्देश्य के प्रति 'नवागत' पत्रिका विद्यार्थियों के बीच एक महत्वपूर्ण कड़ी का काम करेगी। अतः मैं पत्रिका के संपादक मण्डल को बधाई और धन्यवाद देता हूँ कि उन्होंने समय पर पत्रिका का प्रकाशन किया।

डॉ. सूरज भान भारद्वाज
कार्यवाहक प्राचार्य

EDITORIAL BOARD

(From left to right) Dr. Srivatsa Shastri, Dr. Paramita Ghosh, Dr. Ritu Kathuria, Ms. Anupam Goel, Dr. Suraj Bhan Bharadwaj, Dr. Bhaskar, Dr. Brahmdutt, Dr. Mukesh, Dr. Anil Kumar and Dr. Yogesh Gupta

Editorial

It is indeed a blessing to be a part of the institution whose vision is to provide higher education to all sections of society and to offer education as an enabler for young women and men of the nation.

Over the years, the college has transformed into an institution where students from all backgrounds, differing socially, culturally, geographically and economically share a common goal and strive together to evolve into the most competitive youths who can face the challenging world outside. College education is the most crucial part of one's learning trajectory. It not only helps one to discover oneself, but also to dream, to grow and to acquire the potential to do one's best.

The present world provides innumerable options for a career to choose from. Still, most of the young people are unable to make decisions or are unhappy with their lives. Having a clear vision and channelizing all efforts towards it does not come easily to most of us. There are just a few lucky people whose doors are knocked by opportunities and even fewer people who can convert their opportunities into success! In words of Chris Grosser, "Opportunities do not happen, you create them!"

So the first thing that one should do is to have a vision, to have a goal, an ambition. It may be anything from a safe and secured one to a very unusual or challenging one, for "A road less taken often leads to better places!" Progress usually takes place outside the comfort zone. To put it in simple words- more pain, more gain.
After setting up one's goals, one needs to make a conviction. You should be a constant learning machine. There will be hurdles in whatever you do, as, most of the things in life don't work. But, DON'T LOOSE HEART! Embrace your failures with a note of optimism as they are just something you learn from. Patience and perseverance are the keys to success. Steve Jobs once said, "if you really look closely, most overnight successes took a long time." So the next thing to do is to keep going ahead with confidence.
"If you really want to do something, you will find a way. If you don't, you will find an excuse"-**Jim Roln.**
You may have to wade through peer pressures, worldly distractions and personal challenges. But don't give up! At times you might feel being all alone. What to do then? *Ekla chalo Re!* Remember, when the going gets tough, the tough gets going. And surely, you will be a winner! They say that even Gods helps those who help themselves. So be firm and have faith.

Be like a rock and you shall rock!!

Every year, the magazine committee of Motilal Nehru College rethinks on ways to inspire the students to nurture their writing talent and also provide them the opportunity to be read by all. From last year, we have started the e-version of NAVAAGAT. This year we shall continue to put the e-version on our website and thus show our commitment towards the environment by cutting down on paper consumption.

I am delighted to write this editorial on behalf of our team and present before you the bouquet of such brilliant literary pieces that showcase the concerns and inspirations of the students and teachers of our college. Happy reading!

With warm regards,
Ritu Kathuria

Arise, awake, and stop not till the goal is reached

- Swami Vivekanand

प्राचीन भरते नौकाशास्त्रम्

डॉ० श्रीवत्स:
संस्कृत-विभाग:

ऋग्वेदस्य मन्त्रेण ज्ञायते यत् ऋग्वेदकालेऽपि नौकानां प्रयोग: क्रियते स्म। नौका शब्दस्य: प्रयोग: ऋग्वेदादारभ्य सर्वेषु उत्तरवर्तीषु संस्कृत- ग्रन्थेषु दृश्यते। ऋग्वेदस्य मन्त्र: दिव्यनौकाया: वर्णनं करोति। एषा नौ: सुरक्षोपायै: युक्ता विस्तृता दिव्या दोषरहिता सुखयुक्ता दृढा अरित्रै: युक्ता छिद्ररहिता कल्याणकारिणी च आसीत्। ब्राह्मणग्रन्थेषु अपि नौकाया: वर्णनं प्राप्यते। अगस्त्य मुनि: समुद्रम् अपिबत् इति ख्याति: तस्य सर्वेषां समुद्राणां भ्रमणं सूचयति। कौण्डिन्य: समुद्रम् उत्तीर्य दक्षिणपूर्वैशियादेशेषु प्राप्तवान्। ईस्वी पूर्वम् २४५० समये गुजरतप्रान्तस्य लोथल स्थाने नौका स्थात्रस्य उल्लेख: प्राप्यते, यस्मात् इजिप्टदेशपर्यन्तं सामुद्रिकव्यापार: क्रियते स्म। २४५०-२३५० ईस्वी पूर्वं यावत् एतत् व्यापारस्य मुख्यं केन्द्रम् आसीत् । बौद्धशोधकर्ता भिक्षु: चमनलाल: 'हिन्दू- अमेरिका' इत्यस्मिन् ग्रन्थे प्राचीनकालात् अर्वाचीनकालपर्यन्तं नौकानिर्माणकलाया: उल्लेखं कृतवान्। गङ्गाशंकरमिश्र: कल्याणपत्रिकाया: १९५० तमे विशिष्टाङ्के भारतस्य नौकाशास्त्रस्य विस्तृतं इतिहासम् अवर्णयत् । 'भारत में विज्ञान की उज्ज्वल परम्परा' इत्यस्मिन् ग्रन्थे प्राचीनभारतीयनौकाशास्त्रस्य विस्तृतं वर्णनं प्राप्यते। अस्मिन् ग्रन्थे युक्तिकल्पतरुग्रन्थमाश्रित्य लघुनौकानां दीर्घनौकानां च विविधमानानुसारं निर्मितानां बहूनां नौकानां वर्णनं कृतमस्ति। वाल्मीकिरामायणस्य एकश्लोकानुसारं एकस्यां नावि शताधिका: जना: उपवेष्टुं शक्नुवन्ति स्म –

नावां शतानां पञ्चानां कैवर्तानां शतं शतम्।

सन्नद्धानां तथा यूनान्तिष्ठान्त्वित्यभ्यचोदयत्॥ (अयोध्या काण्ड)

महाभारते यन्त्रयुक्तायाः नौकायाः वर्णनं दृश्यते –

सर्ववातसहां नावं यन्त्रयुक्तां पताकिनीम् ।

त्रयोदशशताब्द्यां भारतम् आगतः मार्कोपोलो लिखति – भारतीयाः पोताः दृढतया निर्मिता भवन्ति। लौहकीलकैः सन्नद्धाः छिद्ररहिताः च सन्ति। एकस्मिन् पोते शतत्रयं नाविकाः स्थातुं शक्नुवन्ति। एषु चतुःसहस्रं यावत् गोणिकाः स्थापयितुं शक्यन्ते। एषु लघुप्रकोष्ठाः अपि भवन्ति स्म। सः लिखति अस्माकं पोतेभ्यः भारतीयाः पोताः दीर्घतराः सन्ति। वर्थमा नामकः नाविकयात्री लिखति- भारतीयाः पोताः बहुदृढतराः सन्ति। डॉ० राधाकुमुद मुखर्जी 'इण्डियन शिपिंग' पुस्तके भारतीयपोतानां रोचकं सप्रमाणञ्च इतिहासं प्रस्तौति । पद्मश्री डॉ० विष्णुश्रीधरवाकणकारः लिखति यत् – वास्कोडिगामामहोदयस्य दैनान्दिन्यानुसारं सः भारतं स्वयमेव नागतः अपितु अफ्रिकादेशं व्यापाराय गतस्य चन्दननामकस्य व्यापारिणः निर्देशानुसारं चन्दनमनुश्रित्य एव वास्कोडिगामा भारतं प्राप्तवान्। आंग्लीयानां शासनसमये आंग्लीयाः भारते गोघा नामकान् १५०० टन परिमितान् पोतान् दृष्ट्वा चकिताः अभवन्। आंग्लीयाः भारतीयान् नौशिल्पिनः स्वनौनिर्माणकार्येषु न्ययोजयन्। येन भारतीयानां नौनिर्माणकला शनैः शनैः समाप्ता। आंग्लीयाः शनैः शनैः भारतीयपोतानां उपयोगाय नियन्त्रणनियमान् अकुर्वन्। शनैः शनैः एते भारतीयशिल्पिनः नाविकान् च स्वोद्योगेभ्यः दूरम् अकुर्वन्। एवं कालक्रमेण भारतीयनौकाशास्त्रस्य समृद्धा परम्परा आंग्लीयैः शनैः शनैः विनाशं प्रापिता।

(सार : - ऋग्वेद के परिशीलन से ज्ञात होता है कि ऋग्वेदकाल में भी नौकाओं का प्रयोग किया जाता था। ऋग्वेद का मन्त्र दिव्यनौका का वर्णन करता है। ब्राह्मण ग्रन्थों में भी नौकाओं का वर्णन प्राप्त होता है। ई० पू० २४५० में गुजरात प्रान्त के लोथल में बन्दरगाह का उल्लेख प्राप्त होता है जिससे इजिप्ट देश तक सामुद्रिक व्यापार किया जाता था। युक्तिकल्पतरु ग्रन्थ में विविध मापानुसार निर्मित छोटे बड़े नौकाओं का उल्लेख मिलता है। रामायण एवं महाभारत के पर्यालोचन से विदित होता है कि इस काल में भी यन्त्रयुक्त नौकाओं का प्रयोग किया जाता था। तेरहवीं शताब्दी में मार्कोपोलो लिखते है कि भारतीय पोत लोहे के कील से जुड़े हुए, छिद्र रहित एवं दृढता से निर्मित थे। एक पोत में तीन सौ नाविक बैठ सकते थे। अंग्रेजों के शासनकाल में अंग्रेज भारत में गोघा नामक १५०० टन के पोत को देखकर आश्चर्यचकित रह गये। तत्पश्चात अंग्रेजों ने शनैः शनैः भारतीय नौशिल्पियों को अपने नावनिर्माण कार्य में लगा दिया। जिससे भारतीय नावनिर्माण कला धीरे-धीरे समाप्त हो गयी। इस प्रकार कालक्रम से भारतीय नौकाशास्त्र की समृद्ध परम्परा को अंग्रेजों ने समाप्त कर दिया।)

Artificial Intelligence: Opportunity or Threat

Dr. Devendra Jarwal
Department of Commerce

All students completing their final year might be thinking of the universal question of this stage: What Next? Some will pursue higher studies, some will join family business, some will start their own venture and some will look after opportunities to get hired. In all the course of action one thing will be common i.e. competition. One has to face competition with not only human intelligence but competition with Artificial Intelligence (AI) as well. With the evolution of technological advancement, the caliber of Artificial Intelligence has reached the intelligence of six year old child and at this pace, reaching twenty years age intelligence or higher is not far which is posing big threat for people working in the engineering sector and also skill based employment sector like accountants, auditors and even doctors. AI might facilitate and ease business but the efficiency and accuracy it can deliver to the organisations is very pleasing reason to replace ten persons by one Robot.

Recently Jack Ma said that Artificial Intelligence will kill lot of Jobs. But I suppose, every AI replacement will create eight new Job opportunities:

1. Marketing of AI
2. Selling/Procurement of AI
3. Tutor of AI (How to use)
4. Operator of AI
5. Maintenance of AI
6. Repair of AI
7. Replacement of AI (obsolescence of technology)
8. Disposal of AI

There is no doubt that AI has efficiency and accuracy which will benefit existing business and industry models and in turn new economic opportunities will generate in serving consumer needs resulting in creation of new forms of employment. The biggest testimony of this is the ‘Ling Shou Tong” platform of Alibaba. So don't be scared. Be focused on skilling yourself to match the opportunity and keep exploring new ways to execute traditional business practices.

मित्रों का मानव जीवन पर प्रभाव

प्रियांक त्यागी

कला स्नातक, कार्यक्रम, प्रथम वर्ष

मानव एक सामाजिक प्राणी है। उसने अपने उत्पत्ति काल से ही समूह मे रहना अर्थात् सामाजिक संबंध स्थाप्रत करना अपने हित मे समझा है।इन्ही सामाजिक सम्बन्धों मे से एक है 'मित्रता'। अब चूँकि कोई भी व्यवस्था, एक लंबे समय के बाद दोषों को आत्मसात कर ही लेती है तो मित्रता जैसा महान सम्बंध भी अपने आप को दोष से वंचित न रख सका। मित्रता के सकारात्मक पक्ष(रचनात्मक)को प्रदर्शित करने वाला उदाहरण श्रीकृष्ण-अर्जुन का है तो वहीं कर्ण-दुर्योधन की मित्रता नकारात्मक पक्ष(विध्वंसात्मक)को दर्शाती है।

मित्रता ही वर्तमान समय मे एकमात्र ऐसा रिश्ता है जिसके पूर्व मे व्यक्ति ***BEST*** शब्द का प्रयोग करता है। ये शब्द इस रिश्ते की महत्ता को बहुत हद तक स्पष्ट कर देता है। मित्र ही एकमात्र ऐसा व्यक्ति होता है जिससे हम किसी भी बात को बिना किसी हिचकिचाहट के बता सकते हैं और वह हमारी समस्या का समाधान करता है या आवश्यक उचित सुझाव देता है। लेकिन वर्तमान समय मे मित्रों की उपयोगिता व रूप दोनों परवर्तित हो गए हैं। क्लास बंक करने के बाद अपनी उपस्थिति दर्ज कराने मे, प्रेम संबंध स्थापित कराने मे, सोशल मीडिया के माध्यम से सूचना का आदान-प्रदान मे,पर्यटन मे, पार्टी मे,पठन-पाठन मे आदि अनेक कार्यों मे मित्र अपनी सकारात्मक भूमिका निभाता है।

लेकिन कहा जाता है कि "बुरी संगति कोयले के समान होती है, जो यदि गर्म हो तो हाथों को जला देता है और यदि ठंडा हो तो काला कर देता है।"अर्थात् यदि मित्र की बुद्धि,चरित्र एवं व्यवहार ठीक न हो तो आपके जीवन मे दुःखों के सैलाब के लिए आपको किसी शत्रु की आवश्यकता नहीं होती और न ही बुरे काल की शुरुआत के लिए किसी राहु-केतु,शनि की आवश्यकता है। यदि एक कुमित्र अपना कार्य पूरी ईमानदारी के साथ करे तो आप मानव से पशु कब बन जाएंगे आपको स्वयं पता नहीं चलेगा। कुसंग के ज्वर का दुष्परिणाम हमे वर्तमान समय मे स्पष्ट रूप से दिख रहा है। सामूहिक-दुष्कर्म मे नाबालिगों की संलिप्तता, नशीले पदार्थों का सेवन, चोरी, हत्या आदि अनेक अपराधों मे लोगो की सक्रियता के पीछे मित्रता की अहम भूमिका है। साथ ही अश्लील क्रिया-कलापों की जीवन मे उपस्थिति इस मित्र-मंडली की एक बेजोड़ देन है।

इस पूरे विवरण से एक बात साफ हो जाती है कि मित्र की हमारे जीवन मे बहुआयामी भूमिका है। बस जरूरत है हमे ये देखने की कि कौन-सा व्यक्ति हमारे जीवन के लिए रचनात्मक साबित हो सकता है और कौन-सा विध्वंसात्मक? आज का युवा-वर्ग स्कूल-कॉलेज मे व्यक्ति की चाल, बात करने के तरीके, पहनावा आदि को देखकर ही मित्रता कर लेते हैं जबकि आवश्यकता है व्यक्ति के गुणों को प्राथमिकता देने की।

The Queen

Rahul Sharma
B.Sc. (H) Physics, II Yr.

Her silence was enough, she didn't need to speak
Right behind her eyes were all those answers you seek
It was more than just a pretty face she had
She was the sun in the evening going red.

Kindness sort of dwell in her heart
She had a dream to turn the world into art
Her curiosity led her to the places she's never been before
It was the beat in her heart and the reason she was breathing for.

Her wings were on fire, she was always meant to rise
She was a queen born to avenge the skies
She was different cuz her life was lost in mystery
She was born a legend to be remembered throughout the history.

Her dreams were a reality in the land she went when asleep
Sleep was the answer to all those promises she was suppose to keep
All those secrets was safe in her keep
They were locked away in a lake so deep.

She didn't let go of her humanity even though her heart bleed
And hid the pain in the pages of a book that no one was supposed to read
The best thing about her was the goodness in her soul
She was the shadow of a divine goddess standing tall.

KASHMIR

THE FORGOTTEN PARADISE

Faizan Rashid Lone
B.A. (H) History II Yr.

What comes to your mind first when you hear the word Kashmir? If you inhere the aggressive words like “UNREST”, “STRIKE”, “CURFEW”,“TERRORISM”,“DEATH and PAIN”,it would not surprise me much. To my belief, this is what we arebeing forced to assume upon by certain aspects. The media,often due to some factorial pressure and more often due to TRP FACTOR plays this negative role. But believe me Kashmir is much more different thing what we are made to rely on.

The Kashmir is more about its rich culture and heritage, natural beauty, exotic flora and fauna and none the less warm-hearted people. But unfortunately, these alluring things remain under shield in current scenario.

There is a beautiful couplet written in Persian language by a famous poet, Amir khusro, about Kashmir. It reads like this-

“Agar firdaus bar roo-e zameenast, Hameenast-o hameenast-o hameenast”.

It means:

“If there is a paradise on earth, It is this, it is this, it is this”.

When one visits Kashmir, he realizes that Kashmir is really a paradise on earth, with astonishment, the beauty and peacefulness of the place and its people. The naturalness and steady environment of the valley is simply amazing. The rich and vivid cultural beauty adds to it. The people of Kashmir are known for their hospitality, friendliness, generosity, conviviality and warm-heartedness. The way they treat you is out of thisworld.

When we analyze the case of KASHMIR, we find the IDENTITY PROBLEM, associated with Kashmir, is the main keeps Kashmir and the people therein hidden. What I personally feel is that the people outside the valley [especially of our country] are really unable to realize how close they are to paradise.

After interacting with people outside Kashmir, you will find a common thing that everyone wants to visit this piece of paradise but are held on by the factor words like UNREST,CURFEW etc. This leads people to a misconception that Kashmir remains moored all the time, which is never a truth.

Once you visit Kashmir, all the misconceptions sustain no more. One realizes what has been missing. The valley is surrounded by mountains on all sides and these mountains are snow clad. The land contains innumerable springs, rivers and fresh water lakes, most important being Dal lake and wullar lake. The latter being Asia’s largest one. The outline of the Himalayas reflected in the waters of Dal Lake, is unique of its kind. Kashmir is a land that never ceases to

leave you spellbound. The places like Pahalgam, Gulmarg, Sonmarg, Betab valley, Mughal Gardens, Char chinar and lot more adds to its beauty. Come April, and the famous Tulip garden, largest in Asia, in Srinagar bursts into a riot of colors, with thousands of tulips in full bloom.

In order to draw a conclusion, what worries me most is the attitude of media and press. When one switches to a news channels or picks up a newspaper, it is quite common to find UNREST, CURFEW, TURMOIL, DISRUPTION and CHAOS used as synonymous to Kashmir, otherwise a paradise Valley.

The core aspect of Kashmir thus remains hidden. It is thus need of an hour to pay attention towards this beautiful valley, emphasize and highlight the positivity over negativity, thereby making sure that this “FORGOTTEN PARADISE” getsrejuvenated as an indelible, haunting and persistent place to visitors.

Mysterious Maths

Ruchika Gogia
B.Sc. (H) Mathematics, II Yr.

Father of all subjects
And you can never object
It gives you the proof of all dimensions
Always prove them by contradictions

Getting lost in the difficult questions of integration
Solving the ratio of white and black balls rises the feeling of frustration
Feels like a mess learning all trigonometrical identities
And then induction question shows us amenities

I enjoy solving Maths marathon question papers
Integration formulae get lost from mind like water vapours
Calculating the minima of an unknown function was fun
Getting graph of an equation like the shape of bun

Solving three hours paper in just two hours has always been my craze
And then getting good grades and being praised
Doing silly mistakes in calculations increases my wrath
But I will always love mysterious maths….

प्यार में पेट्रिआर्की

शिवानी
कला स्नातक, हिन्दी विशेष, तृतीय वर्ष

आँखों का मिलना,
क्या होता था!
नहीं जानती थी
उस दिन से पहले

कैसे धड़कने तेज होती हैं
किसी को सोचते ही
नहीं जानती थी
उस दिन से पहले

सैकड़ो के बीच में
किसी एक का ख्याल
कैसे होता है
नहीं जानती थी
उस दिन से पहले

प्यार
एक पल का इकरार नहीं
पूरी की पूरी एक प्राक्रया है
नहीं जानती थी
उस दिन से पहले

जैसे माटी जल के स्पर्श से
महक उठती हो
वैसे मैं भी महक सकती हूँ
नहीं जानती थी मैं
उस दिन से पहले

उम्र बढ़ने की प्रक्रिया में
डाँट तो माँ की भी
पराई हो गयी
फिर वो तेज आवाज
कैसे सुनती
नहीं जानती थी
उस दिन से पहले

उसके प्यार में
खुद को खो देने
बहुत था उसे पाने के लिए
पर घुट-घुट कर जीना
नहीं जानती थी
उस दिन से पहले

कभी मेरे कपड़े-लत्ते को
टोका हो माँ ने
मैं चिल्ला उठती थी
खुद पर अपने सिवा
माँ को भी हक़ नहीं दिया
खुद को तुमसे कैसे बाँटती
नहीं जानती थी
उस दिन से पहले

तेरे मुंह से -
बाबू, बच्ची, पगली सुनना
कभी गलत नहीं लगा मुझे
पर मेरा बड़ा होना
तुझे इतना खलेगा
नहीं जानती थी
उस दिन से पहले

क्या खाया,
क्या पहना, के सवालों में
सबरीमाला पर
क्या राय है - का सवाल
तुम्हें इतना चुभेगा
नहीं जानती थी
उस दिन से पहले

पेट्रिआर्की को जन्म से झेला
महसूस किया
लड़ी भी हूँ
पर प्यार में पेट्रिआर्की
नहीं जानती थी
उस दिन से पहले

पता नहीं!
तुझे मैनें खुद पर
ज़्यादा हक़ दिया
या पेट्रिआर्की ने
तेरा मर्द होना
हमारे प्रेम के लिए बाधा था
या मेरा स्त्री होना

वो जो था -
बहुत खूबसूरत था
पर ये जो है
वो मैं हूँ
पूरी की पूरी मैं
और इससे खूबसूरत
कुछ नहीं।

BLACK

Sparsh Thakur
B.Com. (H), I Yr.

A Dove turned to a Raven,
The sky faded,
Rainbow was not what it seemed like,
I could see its colors bleeding away,
Bleeding black,
But beware because black is black,
And we live in a world of color blinds,
Here black is not acceptable,
So all we do is hide our blacks and paint them colorful,
Making a mosaic,
Losing our own track,
Black is no stranger,
It is so much like me and
so much like you,
Having the essence of every hue,
Discarded and abandoned,
Still, it shines engulfing its own light,
Maybe dead
Or maybe alive,
Mistaken as cold,
Yet bold,
Holds the warmth,
Peaceful as an ocean but having that wrath,
You say it hurts when lights are off,
Darkness sucks like a leach,
But darkness is the only escape sometimes,
Switches become fascinating,
They make a good rhythm too,

On and off and on and off,
Every color fades but black?
Never.
Darkness is soothing in this world,
World hiding cruelty
Behind fallacy,
World generating fakeness
Out of reality,
What if people accepted their frailty,
Nothing would change only the blacks and whites would be separated exactly,
But as they say the messier the better,

Says who? no one actually,
But practiced by everyone,
You too,
Me too,
All in the same herd,
Screaming yet unheard,
And the ones accepting their blacks are laughed upon,
Called dreamy and lunatics and dummies and vagabonds,
But dreams never halt as how can black diss,
Dusk becomes the abode of the ones who are shadow-kissed,
Now embracing the black the bird soared,
Was it a dove or a raven?
Well not bothered anymore,
Sometimes it is good defeat color blinds,
Sometimes it is good to make meaningless rhymes,

Sometimes it is good to love black,
Surprising it reciprocates back.

ट्रेन की मुसाफ़िर

आलोक सुमन
कला स्नातक (विशेष) इतिहास, तृतीय वर्ष

तुम उस ट्रेन की मुसाफ़िर हो,
जो अक्सर बड़ी रफ्तार से लाँघ देती है कई छोटे-छोटे स्टेशन,
जहाँ के बाशिंदे अकसर तुम्हें देखने के लिए तैयार बैठे रहते हैं ,
जो तुम्हारे गुजरते वक़्त अक्सर हाथ हिलाते दिख जायेंगे तुम्हें,
बशर्ते, तुम उन्हें देखो ।

मगर तुम बन्द शीशों में कैद हो कर, उनकी आज़ादी पर हँसती हो,
मैं भी उसी किसी छोटे स्टेशन का एक बाशिंदा हूँ,
जो अक्सर देखता है तुमको,
इसी हसरत से, कि एक दिन दूर किसी सुनसान बस्ती की पटरियों में खराबी आएगी,
और रोक दी जाएगी तुम्हारी ट्रेन मेरे दरवाजों पर,
और तुम बाहर निकल के ये समझ पाओगी की आज़ादी कैसी होती है,
और अगर समझ पाओ इसको,
तो हिला देना अपने हाथ भी, किसी तेज़ रफ़्तार से गुजरती ट्रेन के डब्बे में कैद तुम जैसी ही किसी और को ।

FACING THE REAL DILEMMA!

Ritika Arora
B.Com. (H), I Yr.

Sometimes there is no right or wrong, sometimes you just have to go with your heart.. We have all been there at least once where we don't really know if the thing we have been encouraging for so long is right or not, the thing we have been looking up to is the best to do or the thing we abhor should actually be stayed away from. But we end up doing it or not doing it only for the fact that our heart tells us to.

But do we actually examine whether it is right or wrong? No wait, what is even right and what is not? 'These 19 years have taught me what's right and wrong for me', as they say. But has it??If it has, then why don't I know the answer to whether being a little selfish for yourself is right or wrong, or whether having those deep conversations with a person is right or wrong, or if it is right to miss them inspite of knowing that they would never come back, or is it wrong to get out of your comfort zone to make someone else happy? I have no answer to these puzzled questions, and I expect the same from you. But you know what we end up doing instead of being unaware of the 'right-wrong' tragedy? We end up having ourself prior to anyone else, or we end up trusting that person and enjoying secret games which we know no one would play this good, or we end up missing that person and sometimes hoping to get them back and at the same time remembering of how harsh that person made you, or we just end up jumping out of our tub of comfort to help those droplets of need and then we end up doing what it feels to be right.. Even after knowing that all of this could harm you, you still believe in living the moment no matter how bad it turns out to be..

We've made mistakes, massive mistakes which we ourselves feel embarrassed of. Trusting a wrong person. Betraying another. Being cheated on. Hurt someone. Hurting oneself. Cried over a wrong person. Making efforts and not getting in return. Regretting our bad ass mouth. And the list goes on. Sorry, but it will never end instead just grows. People make mistakes and they will. That's how it goes and its time to accept it.

No matter how bad it hurts, we are going to still try, try to make it happen this time, try to make this time a happy ending and one day it will be.. No, its not that easy how it is framed. It hurts. Just like a burnt wound which is worse. Umm, let's get practical here, worst.. Only those who have suffered it knows and I wish none should.(Thankfully, I haven't)

It burns and scorches the time fire touches you just the way you are emotionally hurt. You don't feel life for a moment and you realize things are coming to an end. You are broken and you just pity yourself. You are numb till you sense water flickering all over you, trying to make you feel better, just like any other person trying to come in your life making things easy for you. But you try to avoid it. Because it pains, the water on the burning fire feels terrible and so does that person coming your way. You know the results are going to be good but you are just afraid to let that thing cause more pain if not succeeded. But you still allow it, allow the water to douse the

fire and that person to make you feel better. The water has done its work and then it leave and so does that person. You regret it again because your scars aren't yet healed. It takes time and you know that too but you won't let that pain come across again. This time you are tired, a lot more than before. A surgery is harmful and so is that another person. You are never ready for this but you would still do it for this time you have the courage to take risk, challenge the outcome and just go with the flow. Maybe it works, maybe it does not. Maybe the scars are gone, maybe there is a sight of some, maybe that person didn't leave, maybe he does. But this time, you are ready for another try. Not because this would be the last time but because you are ready for many such surgeries, more pain, more challenges that one day you are going to conquer it. The scars will go one day for sure.

Similarly, what is yours will find you. You don't have to beg for it and cry for hours today if you don't have what you wanted. If its meant to happen, it will. No one can stop you from having what yours but all you need to do is wait. Wait for the right friend to come and listen to your crap, the right job to make you happy, the right business of your choice, the right soulmate with whom you never feel insecure.

Till then just do what you think is right!

Being afraid to stepping in that mud hole to save yourself from the dirt when the whole road is filthy won't help. You need to move forward and see what life throws at you, in how many colors! :D Just don't stop there and miss the fun..

Afterall the most memorable days usually end up with the dirtiest clothes!

अथर्ववेदस्य महत्त्वम्

वेदमित्रार्यः

संस्कृत-विभागः

वेदाः मानवसमाजस्य प्रकाशस्तम्भाः सन्ति। वेदानां ज्ञानं विश्वसंस्कृतेः आधारशिला अस्ति। चतुर्षु वेदेषु अथर्ववेदः वैदिकवाङ्मयस्य शिरोभूषणमस्ति। यद्यपि गौरवस्य यज्ञोपयोगितायाः मन्त्रसंख्यायाः च दृष्ट्या ऋग्वेदस्य प्रथमं स्थानमस्ति। तथापि सांस्कृतिक-दार्शनिक-आध्यात्मिक-समाजशास्त्रीय दृष्ट्या अथर्ववेदस्य अत्यन्तं महत्त्वपूर्णं स्थानमस्ति। संस्कृतेः सभ्यतायाः यावत् विवेचनं अथर्ववेदे प्राप्यते तावत् अन्यवेदेषु न दृश्यते। कौशिकसूत्रे अथर्ववेदे वर्णितानां विषयानां विस्तृतं विवेचनं प्राप्यते । तत्र धर्मार्थकाममोक्षात्मकानां पुरुषार्थानां साङ्गोपाङ्गं वर्णनमस्ति। शास्त्रीय दृष्ट्या धर्मस्य दर्शनस्य तत्त्वमीमांसायाः च सर्वाणि तत्त्वानि अथर्ववेदे विद्यन्ते। समाजशास्त्रीय दृष्ट्या अत्र राजनीतेः अर्थशास्त्रस्य धर्मशास्त्रस्य ज्ञानविज्ञानस्य च विशालं स्रोतः उपलभ्यते। साहित्यशास्त्रस्य दृष्ट्या अत्र रसः अलङ्कारः छन्दः भाव-भाषासौन्दर्यं रसानुगुणता च

विद्यन्ते। व्यवहारोपयोगितायाः दृष्ट्या अस्मिन् भावनात्मक-प्रेरणायाः मननस्य चिन्तनस्य कर्तव्योपदेशस्य आचारशिक्षायाः नीतिशिक्षायाः च विपुलो निधिरस्ति। जीवनस्य सर्वाङ्गीणविकासाय अपेक्षितानां सर्वेषां तत्त्वानां समावेशोऽस्मिन् वेदेऽस्ति। सायणेन अथर्ववेदस्य महत्त्वं प्रतिपादयता उच्यते यत् अन्ये त्रयः वेदाः मोक्षात्मकाः पारलौकिकाः फलदायकाः सन्ति। परन्तु अथर्ववेदः उभयात्मकं लौकिकं पारलौकिकञ्च फलं ददाति।

व्याख्याय वेदत्रितयम् आमुष्मिकफलप्रदम्।

ऐहिकामुष्मिकफलं चतुर्थं व्याचकीर्षति॥ (अथर्ववेदभाष्य उपो० श्लोक-१०)

गोपथ-ब्राह्मणे अथर्ववेदस्य विषये निगदितम् यत् यज्ञे होता अध्वर्युः उद्गाता ब्रह्मा चैते चत्वारः ऋत्विजः सन्ति। एतेषु चतुर्थः ब्रह्मा अस्ति। अथर्ववेदविदेव ब्रह्मा भवति। स एव यज्ञस्य संचालको भवति। ब्रह्मा चतुर्वेदाध्यद् भवति परन्तु तस्य मुख्यः वेदः अथर्ववेदोऽस्ति।

ऋग्विदमेव होतारं वृणीष्व। यजुर्विदमध्वर्युम्। सामविदम् उद्गातारम्। अथर्वाङ्गिरोविदं ब्रह्मणम्।

(गोपथ० १.३.१)

गोपथब्राह्मणस्य ऐतरेयब्राह्मणस्य च मते यज्ञे पक्षद्वयमस्ति - वाचिकं मानसिकञ्चेति। ऋग् यजुः सामश्चैतैः त्रिभिः वेदैः केवलं वाचिकपक्षस्य बोधो भवति। परन्तु यज्ञस्य मानसिकपक्षस्य ज्ञानं केवलं अथर्ववेदाध्यदा ब्रह्मणा एव प्राप्यते। यज्ञस्य साधनद्वयमस्ति- वाणी मनश्च। उभयोः समन्वितरूपेणैव यज्ञस्य पूर्णता भवति।

स वा एष त्रिभिर्वेदैर्यज्ञस्यान्यतरः पक्षः संस्क्रियते।

मनसैव ब्रह्मा यज्ञस्यान्यतरं पक्षं संस्करोति॥ (गोपथ० १.३.२)

अथर्ववेदः सर्वश्रेष्ठः वेदः इति गोपथब्राह्मणः स्वीकरोति। एषः वेदः ब्राह्मणादीनां नाशकतत्त्वानि नाशयितुं संबभूव।

श्रेष्ठो ह वेदस्तपसोऽधिजातो ब्रह्मज्यानां क्षियते संबभूव। (गोपथ० १.१.९)

अथर्वपरिशिष्टानुसारम् अथर्ववेदस्य मन्त्रे शक्तिर्विद्यते। एतेन सर्वविधशक्तिर्सिद्धिश्च प्राप्तुं शक्यते।

न तिथिर्न च नक्षत्रं न ग्रहो न च चन्द्रमाः।

अथर्वमन्त्रसंप्राप्या सर्वसिद्धिर्भविष्यति ॥ (अथर्वपरिशिष्ट , २.५.५)

अन्यत्र अथर्वपरिशिष्टे उल्लेखो विद्यते यत् यस्य राज्ञः राज्ये अथर्ववेदस्य विद्वान् निवसति तस्य राष्ट्रं निरुपद्रवं भूत्वा समृद्धं भवति।

यस्य राज्ञो जनपदे अथर्वा शान्तिपारगः ।

निवसत्यपि तद् राष्ट्रं वर्धते निरुपद्रवम् ॥ (अथर्वपरिशिष्ट , ४.६.१)

उपर्युक्तेन वक्तुं शक्यते यत् सम्पूर्णे वैदिक-वाङ्मये अथर्ववेदस्य विशिष्टं महत्त्वपूर्णञ्च स्थानमस्ति।

सार : - वेदों का ज्ञान विश्वसंस्कृति की आधारशिला है। चारों वेदों में अथर्ववेद का स्थान बहुत ऊँचा है। यद्यपि यज्ञोपयोगिता और मन्त्र संख्या की दृष्टि से ऋग्वेद का प्रथम स्थान है तथापि सांस्कृतिक, दार्शनिक, आध्यत्मिक एवं समाजशास्त्रीय दृष्टि से अथर्ववेद अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। कौशिक-सूत्र के विवेचन से ज्ञात होता है कि अथर्ववेद में धर्म, अर्थ, काम और मोक्षरूपी पुरुषार्थ-चतुष्टय के सभी अंगों और उपांगों का विशद वर्णन है। शास्त्रीय दृष्टि से धर्म, दर्शन, अध्यत्म और तत्त्वमीमांसा से सम्बद्ध सभी तत्त्व इसमें विद्यमान हैं। समाजशास्त्रीय दृष्टि से इसमें राजनीति, अर्थशास्त्र, धर्मशास्त्र, ज्ञान और विज्ञान का विशाल भण्डार उपलब्ध है। साहित्यिक दृष्टि से इसमें रस, अलंकार, छन्द, भाव-भाषासौन्दर्य और रसानुगुणता विद्यमान है। व्यवहारोपयोगिता की दृष्टि से इसमें भावात्मक-प्रेरणा, मनन, चिन्तन, कर्तव्योपदेश, आचारशिक्षा और नीतिशिक्षा का विपुल भण्डार है। सायण ने अथर्ववेद का महत्त्व बताते हुए कहा है कि अन्य तीन वेद स्वर्ग प्राप्ति आदि लौकिक फल देने वाले हैं, परन्तु अथर्ववेद लौकिक और पारलौकिक दोनों प्रकार का फल देने वाला है। अथर्ववेद से लौकिक सुखों की भी प्राप्ति होती है, अत: यह अन्य तीनों वेदों से उत्कृष्ट है।)

संस्कृतपठनाय दृढसङ्कल्प:

डॉ० पूजा बुन्देल
संस्कृत विभाग

कलकत्ताया: उच्चन्यायालयस्य न्यायाधीश: आसीत्, सरविलियम् जोन्स। तस्य बाल्यकालादेव पठने रुचि: आसीत्। इतिहासे कलाकौशलेषु विज्ञानक्षेत्रे च तस्य विशेषा अभिरुचि: आसीत्। स: द्वादशभाषा: पठितवान् आसीत्। इंग्लेण्डदेशत: यदा भारतम् आगतवान् तदा अचिन्तयत् – मया संस्कृतमपि पठनीयम्। किन्तु क: तं म्लेच्छजनं संस्कृतं पाठयेत्? संस्कृतस्य कश्चिदपि पण्डित: समाजात् स्वस्य अपकीर्ते: भयात् पाठनाय तत्पर: न भवति स्म।

बहुत्र अन्वेषणानन्तरं पाठनाय एक: वैद्य: तत्पर: अभवत्। स: अपि अनेका: प्रतिज्ञा: स्थापितवान्। यस्मिन् कक्षे पाठयामि तत्र केवलम् एका उत्पिटिका भवेत्, द्वे आसन्द्यौ भवेताम्। प्रतिदिनं हिन्दुकर्मकर:

तस्य कक्षस्य सम्मार्जनं कुर्यात्। उत्पिटिकायाम् आसन्द्यां च गङ्गाजलं प्रक्षिपेत्। सर विलियम् जोन्स: मांसं मदिरां च त्यजेत्। पाठनात् पूर्वं पाठनात् पश्चात् वस्त्रपरिवर्तनाय भिन्न: कक्ष: भवेत्। मासिकी दक्षिणा शतरूप्यकात्मिका स्यात्। गृहात् यातायातं कर्तुं पालकीव्यवस्था करणीया। इत्यादय: अनेका: प्रतिज्ञा: प्रस्थापिता:। जोन्समहोदय: सर्वा: अपि प्रतिज्ञा: स्वीकृतवान्। तेन तु संस्कृतपठने दृढनिश्चय: कृत एव आसीत्। पठनम् आरब्धम्। काठिन्य: तु आसीत् एव। जोन्समहोदय अपि अल्पां हिन्दीभाषां जानाति स्म। किन्तु पण्डितवर्य: किञ्चिदपि आङ्ग्लभाषां न जानाति स्म।

"राम: रामौ रामा: ....." इत्यत: पठनाय श्रीगणेश अभवत्। जोन्समहोदय: नम्र: सुशील: च छात्र आसीत्। तेन गुरुशुश्रुषया परिश्रमेण च गुरु: प्रसन्न: कृत:।

एकवर्षस्य पठनानन्तरं जोन्समहोदय: स्वविचारान् संस्कृतभाषायां सुगमतया प्रकटयितुं समर्थ अभवत्। पश्चात् स: संस्कृतस्य प्रसिद्ध: विद्वान् अभवत्।

जोन्समहोदयेन 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' नामकस्य नाटकस्य संस्कृते अनुवाद: कृत:। जर्मन्कवि-गेटे तस्योपरि काव्यं लिखितवान्। युरोपदेशे संस्कृत-साहित्यस्य चतुर्दिक्षु प्रशंसा अभवत्।

रूढिवादिनां कठोरतायां सत्यामपि जोन्समहोदय: संस्कृते योग्यतां प्राप्तवान्। एष: सातत्य-परिश्रमस्य परिणाम आसीत्। जोन्समहोदयस्य जीवने त्रीणि सूत्राणि आसन् – (१) आत्मोदयस्य कोऽपि अवसर: हस्तात् न गच्छेत्/पतेत्। (२) यत्कार्यम् एकेन सम्भवति चेत् अन्येन तत्कार्यं कथं न सम्भवेत्। (३) आरब्धं कार्यं विघ्नै: प्रतिहन्यमानोऽपि न त्यजेत्।

कीदृशानि सुन्दराणि सूत्राणि सन्ति, यानि स्वस्य जीवनस्य समुन्नत्यै उपयुक्तानि सन्ति। येषां सूत्राणाम् आश्रयेण जोन्समहोदय आत्मोन्नतिं प्राप्तवान्।

(सारांश – कलकत्त उच्चन्यायालय के न्यायाधीश थे सर विलियम्जोन्स। उनकी बचपन से ही पढने में रुचि थी। इतिहास, कलाकौशल और विज्ञान में उनकी विशेष रुचि थी। उन्होनें १२ भाशाएं पढीं थी। जब वो इंग्लेण्ड से भारत आये तब उनकी संस्कृत पढने की इच्छा हुई। उन्होंने संस्कृत पढाने के लिए शिक्षक ढूढंना प्रारम्भ किया। हर जगह अन्वेषण करने के पश्चात् उन्हें एक वैद्य मिला। उस वैद्य ने उनसे बहुत सारी प्रतिज्ञाएं ली। उन्होंने सारी प्रतिज्ञाएं स्वीकार की क्योंकि उन्होंने संस्कृत पढने का दृढ निश्चय किया था। प्रारम्भ में उन्हें सीखने में थोडी कठिनता हुई लेकिन एक वर्ष के अध्ययन के बाद वे सुगमता से अपने विचार संस्कृत में प्रकट कर लेते थे। उनके गुरुसेवा और परिश्रम से वैद्य भी प्रसन्न था। जोन्समहोदय संस्कृत के प्रसिद्ध विद्वान् हुए और उन्होंने "अभिज्ञानशाकुन्तलम्" का संस्कृत में अनुवाद किया जिससे युरोपदेश में चारों तरफ संस्कृत की प्रशंसा हुई।

IN HARMONY WITH MOTHER NATURE

Garima Kapoor
B.Sc. (H) Chemistry, II Yr.

Human beings and nature have a very special relationship. The first civilizations sustained themselves were established on the banks of rivers. The ancients also write about the PanchTatvas- Prithvi(Earth), Agni(Fire),Vayu(Air),Jal(Water) and Akash(Sky) and how our life systems are based on them. The ancients preserved nature and took

good care of it. But, today we ourselves have created ecological balances. We can either accept this and live in discomfort or we can take corrective measures. I remember my childhood days where I used to spend my entire day playing outdoor games, but now because of the changing atmosphere and the air becoming more and more polluted, children nowadays prefer to remain indoor. This is dampening their growth. Delhi was filled with trees everywhere and now it's the total opposite of what I saw as a child.

Climate around us is changing at a very fast pace. Animals are being extinct and are on the verge of losing their habitat. Forest cover is declining and so the water levels. Only 1% of water available is

freshwater that is mostly found in glaciers and rivers. Glaciers are melting faster than ever. Smoke from industries, burning of garbage and shifting cultivation are some major factors responsible for Air Pollution. The air around us is hazardous. Is this what our ancients gave us? Is this what we ought to give our future generations? The time is no far when we will be buying fresh air. We as a society can determine how we can bring a change:-

The first aspect is PUBLIC AWARENESS. We can do this by spreading messages through social media, debates, poems, articles, slogans, posters and journals. It should

be crucial for schools and colleges to come up with a subject on environment. This will encourage young minds to save our

Mother Earth in every way possible. Questioning each other on environmental issues will encourage awareness. One such public awareness was started by our Prime Minister Narendra Modi's government in 2014 named "SWACHH BHARAT MISSION", this mission focuses on ideals of Mahatma Gandhi that "Cleanliness is next to Godliness". The objective of the mission is to clean India and provide sanitation facilities to all. We also see public awareness In "UJJWALA YOJANA", which has reduced indoor air pollution due to unhealthy cooking practices that were causing respiratory diseases.

The second aspect is INTERNAL COUNSCIOUSNESS. Until and unless we find beauty in Mother Earth and its miracles we cannot be enlightened. Respect for nature is at the core of India's tradition.Also India is moving at a quick pace in cleaning its rivers. The "NAMAMI GANGE MISSION " proves to be successful in several parts of Ganga.Our country is also devoting it's attention to renewable sources of energy so that every Indian village has its own power generating source. "SKILL INDIA" in the environmental sector launched various schemes such as "GREEN SKILL DEVELPOMENT PROGRAMMEE" which focuses on skilling seven million youth in environment, climate, forestryand wildlife change sector. It is our responsibility to save and care for our Mother Earth. Its timewe take this matter seriously and join hands towards saving our planet. The government is working towards saving Earth and sustainable development can only be achieved when the entire society pledges to save our Mother Earth.

फ़िराक़ गोरखपुरी ----------

एक मुद्दत से तिरी याद भी आई न हमें
और हम भूल गए हों तुझे ऐसा भी नहीं

साहिर लुधियानवी ----------

जब तुम से मोहब्बत की हम ने तब जा के कहीं ये राज़ खुला
मरने का सलीक़ा आते ही जीने का शुऊर आ जाता है

आज के समय में विकलांगों का महत्व

डॉ० मोहंथी प्रसाद यादव
हिंदी विभाग

एक पंक्ति से अपनी बात कहना चाहता हूँ -

लूई ने हमें सिखाई सिख नहीं मागंना झुककर भीख
अपने कर्म परिश्रमों के बल पर सारा संसार लिख देना तुम

आज के समय में विकलांगों का महत्व के विषय में ये कहना सत्य होगा की जैसे-जैसे आधुनिक काल में परिवर्तन हुआ है संचार माध्यमों का विकास है. इन माध्यमों से पठन-पाठन और ज्ञानवर्धन के लिए सभी तरह की जानकारी इकट्ठा करते हैं. रेडियो. टी. बी., मोबाइल के माध्यम से जानकारीयां लेते रहते हैं.

जैसा की हम जानते हैं कि विकलांगों को समय समय पर संघर्ष करना पड़ता रहा है. समाज में उन्हें भेदभाव का सामना करना पड़ता है लेकिन धीरे-धीरे इसमें परिवर्तन देखने को मिल रहा है. भारत का संविधान अपने सभी नागरिकों के लिए समानता, स्वतंत्रता, न्याय व गरिमा सुनिश्चित करता है और स्पष्ट रूप से यह विकलांग व्यक्तियों समेत एक संयुक्त समाज बनाने पर जोर डालता है.

यह माना जाता है कि विकलांगों को बेहतर सुविधा व अवसर मिले तो वो बेहतर कर सकते हैं. जनगणना 2001 के मुताबिक, देश में 2.19 करोड़ लोग विकलांगता के शिकार है, जो कुल जनसंख्या का 2.13% हिस्सा हैं. भारत सरकार ने विकलांगों के लिए कानूनों को लागू किया है. विकलांग व्यक्ति (समान अवसर, अधिकार सुरक्षा तथा पूर्ण भागीदारी अधिनियम 1995 , जो ऐसे लोगों को शिक्षा, रोजगार, अवरोधमुक्त वातावरण का निमार्ण, सामाजिक सुरक्षा इत्यादि प्रदान करता है.

1* विकलांगता की रोकथाम

विकलांगता को रोका जा सकता है. इसलिए इसकी रोकथाम के लिए प्रयास करने की आवश्यकता होगी. ऐसे रोगों की रोकथाम के लिए कार्यक्रम को बढावा देना होगा. जिससे विकलांगता बढ रही हैं तथा उत्पन्न हो रही है. ऐसे में गर्भावस्था के दौरान और उसके बाद होने वाली विकलांगता के लिए जागरूकता फैलाने की ज़रुरत है. कुछ लापरवाहीयों की वजह से भी विकलांगता होती है. जैसे - चेचक, बुखार, बिमारी की पहचान न हो पाना, गलत सुई लग जाना आदि. लेकिन सुधार हो रहें हैं. अब चीजों को पूरी तरह से देखने के बाद ही इलाज शुरू होता हैं.

2* विकलांग व्यक्तियों के लिए शिक्षा

विकलांग अधिनियम 1995 के अनुच्छेद 26 में विकलांग बच्चों को 18 वर्ष की उम्र तक मुफ्त और अनिवार्य शिक्षा प्रदान करने का प्रावधान हैं. जनगणना 2001 के अनुसार 51% विकलांग व्यक्ति निरक्षर है. कुछ गैर सरकारी संस्थान इनमें मदद कर रहे हैं. जैसे - NFB -National Federation Of The Blind, NAB, SAKSHM आदि. ये संस्थान समय - समय पर विभिन्न प्रकार की ट्रेनिंग भी देती है. जैसे Computer, Shorthand, Speaking Course, Movielty आदि.

3* आधुनिक काल में विकलांगों के लिए तकनीक

सूचना प्रौध्गिकी के माध्यम से दृष्टिहीन, मुक-बधिर, डिस्लेक्सिया, लक्वाग्रस्त यानी शारीरिक या मानसिक रूप से विकलांग लोगों तक टेक्नोलॉजी के लाभ पहुंचाने के लिए तमाम कोशिशें की जाती रहीं हैं.

4* ब्रेल सर्फर

यह एक खास किस्म का वेब ब्राउजर है जो वेबसाइटस् की चीजों को सामान्य टेक्सट को बडे रूप में दिखाता है. ब्रेलर से भी लिखा पढा जा सकता है. जो कम समय में अधिक कार्य करता है. आज के समय में मोबाइल पर भी काम करना आसान हो गया है. What'sApp, Facebook, Tweeter, Jozz Talks के माध्यम से यह संभव हो पाया है.

5* वैशिवक स्तर पर विकलागों के लिए कार्य

संयुक्त राष्ट्र के तत्त्वाधान में कई वैशिवक निकाय व एजेंसियां विकलागं बच्चो के लिए शिक्षा तथा अन्य तरह से सहायता दे रहे हैं. इसमें आर्थिक तथा सामाजिक मामलों के विभाग विश्व बैंक, विश्व स्वास्थ्य संगठन, यूनिसेफ आदि सभी के लिए आजीवन सीखने की अवसरों को बढावा देना, असमनाताओं को कम करना जैसे कार्यों की पुष्टि समावेशी शिक्षा कार्यों से भी होती है.

6* विकलांगजनों के प्रति समाज का दायित्व

हमारा दायित्व हैं कि हम विकलागों की शारीरिक स्थिति को नजर अन्दाज़ करते हुए उनके आत्म विश्वास एवं मनोबल को बढायें और उनकी कार्य को देखते हुए उन्हें समाज की मुख्य धारा से जोड़ने का प्रयास करें और उनके प्रति हीन भावनाओं को बदलने का प्रयास करें. इन्हें मुख्य धारा में लाने के लिए समय-समय पर इनकी समस्याओं पर ध्यान दिया जाये. स्कूल, कॉलेज, दफ्तरों में इनकी समस्याओं के निवारण के लिए समिति होनी चाहिए.

निष्कर्षत: हम यह कह सकते हैं की किसी भी प्रकार के विकलागों को समाज का सहयोग मिले तो वो भी अपने सपनों को पूरा कर सकते है. तथा देश का मान बढा सकते हैं. साथ ही अपना जीवन व समाज को बेहतर बनाने में योगदान दे सकते हैं. जैसे विभिन्न खेल-कूद, यू.पी.एस.सी. आदि में सफल हो रहे हैं.

कुछ कवितायें

आस्था प्रियदर्शिनी
कला स्नातक (विशेष) हिन्दी, तृतीय वर्ष

1.

केहू कइसे बताई ई बेमारी ए भइया,
ई त चढ़ल बाटे इंगलिस के खुमारी ए भइया।

ई बिलायती माला में सब जाप हो जाई,
खाली एगो सॉरी से सब माफ़ हो जाई।
बिना कमी काहे होता उधारी ए भइया,
ई त चढ़ल बाटे इंगलिस के खुमारी ए भइया।

'आई हो दादा' कहे के सुख 'ओ माय गॉड' में नइखे,
'कइसन बा' वाला रूख 'व्हाट्स अप डूड' में नइखे।
बिना आपन बोली सुन्न बा दुआरी ए भइया,
ई त चढ़ल बाटे इंगलिस के खुमारी ए भइया।

'राउर' कहे में जऊन मरजाद होखेला,
जादा बनले बिना भी प्रेम आबाद होखेला।
आपन बोली के खोली केवाड़ी ए भइया,
ई त चढ़ल बाटे इंगलिस के खुमारी ए भइया।

गँवई बोल बिना कइसे भौकाल मची हो,
मशीन रहत भाव के अकाल रही हो।
माई से दूर केहू केतना दिन गुजारी ए भइया,
ई त चढ़ल बाटे इंगलिस के खुमारी ए भइया।

2.

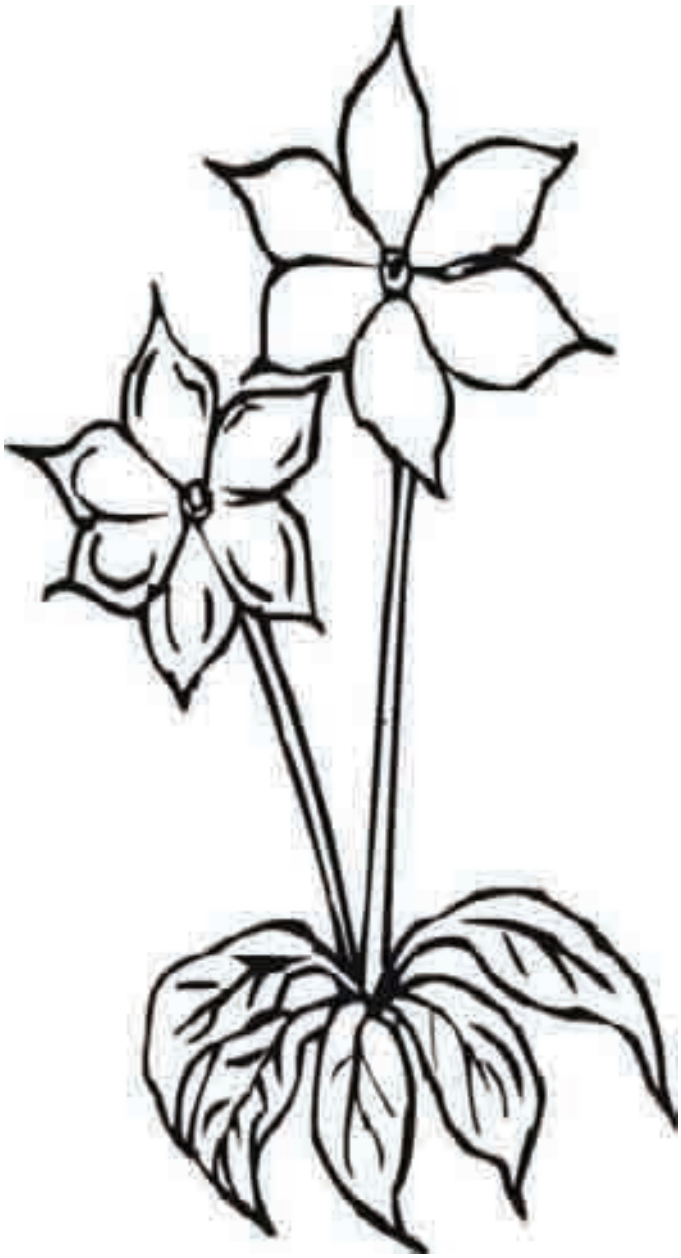

भईल गाँव वाला जीभ अब चोख ए बहिना,
बाटे मुस्किल लगावल अब रोक ए बहिना।

भोरे बइठल चटाई पर किताब पढ़ेली,
संझिया भन्सा करत गुनगुनात रहेली।
अबही बदलल बा बबुनी के शौक़ ए बहिना,
बाटे मुस्किल लगावल अब रोक ए बहिना।

एतना लाट साहब बने के कउनो काम नइखे,
होई बियाह अउरो कउनो परिणाम नइखे।
चूल्हा-चौकी में जीवन द झोंक ए बहिना,
बाटे मुस्किल लगावल अब रोक ए बहिना।

करऽ सोलह-सोमारी आ कथा-पुरान पढ़ ल,
आपन सांठ में ले जाये के समान गढ़ ल।
घर के चौखट ह तोहर ना कि चौक ए बहिना,
बाटे मुस्किल लगावल अब रोक ए बहिना।

जब-जब कउनो लइकी के जबान खुलेला,
बाड़ी केतना अमनिया इ सवाल उठेला।
जाने बुद्धि से हटी कब इ जोंक ए बहिना,
बाटे मुस्किल लगावल अब रोक ए बहिना।

फ़ैज़ अहमद फ़ैज़ ----------

'वो बात सारे फ़साने में जिस का ज़िक्र न था
वो बात उन को बहुत ना-गवार गुज़री है'

Physicist at a Funeral

Prateek Choubey
B.Sc. Physical Science with Chemistry, II Yr.

There was a storm when Mr. Srinivas had died of a cardiac arrest. The sound of thundermight have silenced his cries for help when he died in the discomfort of his home. Heowned an outsourcing company in a metropolitan city and just a few years before hisdeath, His company had made huge profit, So huge that nobody could comprehend.Which was the reason why there were so many people at his funeral, some fornetworking, some to encourage Mr. Srinivas's sons to sell his company and very few toactually mourn his loss.Amongst these people there was a man sitting at the corner of the hall. His frail, ill fittedgray coat and rimmed spectacles made people assume that he was not a businessman,Perhaps a scientist of some sorts. A slight occasional smile made people turn away theirheads and made them wonder if that man was crazy. Some people might've guessed thatthat man was Mr. Srinivas's childhood friend.

At the function people were saying their remembrance speeches, About how Mr. Srinivaswas a great man and all the generic stuff people talk about at funerals. Most of thespeeches laid emphasis on the fact that Mr. Srinivas was no longer alive.After a businessman had finished his speech. That man in the grey coat walked towardsthe pulpit. People convulsed in their seats as the man held the microphone in his hands.

Good Evening Everyone! The man began. The crowd didn't pay attention.I don't like how most people who have given their remembrance speeches before mehave pointed out that Nivas is no longer here with us. I would like to say that Nivas isstillalive; The man spoke, His last sentence had attracted everyone's attention. Someeven wondered if Mr. Srinivas's death was a publicity stunt.

I don't know if any of you have ever heard about the Law of Conservation of Energy. Itstates that energy can neither be created nor destroyed. Bhagwad Gita says that the soulcan never be destroyed, as I look at it from science's perspective I can say that the soulis nothing but energy; The crowd listened as the man spoke with glow in his eyes whichwas magnified with his spectacles.And I can say that it would have taken lots of energy for the universe to create a manlikeNivas , and it took a lot of energy to call him back, The sons cried as theyremembered the storm that came when their father died.

When they set Nivas; lifeless body on fire the heat given out had increased the entropyof the universe. Some of it was absorbed by us too. So, Needless to say, A part of Nivasexists in us too; There were tearful smiles in the crowd.

I met Nivas when I was in class 8, When I think about him I can't help but remember aglow in his eyes. I don't know if his eyes were filled with luminol but somehow they werealways emitting photons,The man spoke sometimes gesturing with his hands. "And when I saw Niwas for the

last time, I cried when I saw his white... the old manchoked and shed a tear. The crowd knew that the old man was talking about the whitepupils of Mr. Srinivas when he died.I began this speech saying that Nivas is still alive, Of course he is. Nivas is still with us and will always will be"; The man continued.

Nivas will always be alive in every thing in this universe. Every wave , every vibration,Every light in the electromagnetic spectrum, every joule of heat. Everything that wasNivas will remain in this world. Even when he think about what a great man Nivas was,Nivas will live in the electronic impulses of our brains when we think about him. Nivaswill always be with us amid all the energies of the cosmos.I'm not saying that Nivas is gone. Nivas will always be with us , No matter how far he is
from us.

In the end , I'm not saying that it is important to have faith. Its okay to not have faith. Iwould say that Conservation of energy holds true for everything in this vast expanseirrespective of space and time. I would say that this science is sound, and maybesomewhere far far away Nivas is still around,The old man ended his speech. The whole crowd cheered for the man, everyone was in tears. But not of sadness, of joy.

नारी

प्रियंका चौरसिया
संस्कृत विभाग

अविरल, निर्झर मन प्रीति सरोवर
जीवंत, मृदुल आँखों की ये गागर
अदम्य अक्षुण्य सृजन की धरा
कब तक बहेगी तेरी ये अश्रुधारा

जब जीब रचा ईश्वर ने धरा पर
अपना अंश तुझे प्रदान किया
जो धैर्य जो साहस पाया तूने
तो कमजोर खुद को क्यों मान लिया

धरती सूनी आकाश अधूरा
तेरे बिन करतार न पूरा
तू ही सृजना तू ही अभया
कहाँ गया संकल्प वो तेरा

जब तक न जागी तू नींदों से
दुनिया की जकड़ी जंजीरों से
कहाँ है तब तक जीवन का मोल
तू ही तो है ईश्वर की कृति अनमोल

TIRED

Ritika Arora
B.Com. (H), I Yr.

It bothers me..

This feeling,
this imitated version,
forcing to act normal,
and let go what happened..

This pressure,
compelling to smile and laugh,
and make someone else's day..

This fakeness,
to be strong,
in front of those,
who made you weak..

This concern,
No, not for all,
But for some,
who don't retaliate..

This stress,
of moving ahead,
of repeating,
and coming back on the same page..

This rudeness,
to those who never deserved,
those who are by my side always,
who WERE by my side always..

This ignorance,
but by them,
for whom my efforts were just like another wind,
blown away with ease..

Sorry mates,
This is not just a wind,
but a tornado,
which right now is tired..
That declaration by them,
of me being strong was never wrong,
but barely they knew,
strong women need their hands to be held too..

HAPPY TO BE UNHAPPY

Sehar Abdullah
B.A. (H), Political Science I Yr.

"I wonder what habit will she develop this year. She gets new habits each new year", another laughing, smiling face saidwhile mocking my strange behavior of repeating my daily activities more than usual. As a kid, I was in a habit of repeating my everyday activities like a certain word, sound or even action more than once. For example, I would make the sound of click with my mouth more than 50 times per day. Whenever someone would start up a conversation I would end it with asound of click, not once but I will repeat this sound more than 10 times. As much as it sounds funny, it was a bitter truth. I tried not to make conversation outside so as to not get so vocal with my habit outside the family. I could bear my family mocking me on this but not anyone from outside. Once I developed a habit of straightening up the doormat or kissing something more than thrice if I accidentally or intentionally touched it or looking again and again at a certain thingconsistently. I didn't know why I did it. When did it start? No one could say. But one thing was for sure everyone includingme thought it wasn't normal and wanted me to stop it, but the only difference was that I didn't know how to stop it. I wouldtry hard for a day, the next day it started on its own.

After almost 7 years of struggling with it, getting mocked at home, ridiculed in front of relatives and being bullied in school,it was during my 12 th class boards preparation that I read about OCD(Obsessive Compulsive Disorder). It is one of thecommon disorders around the world affecting people of different intensity. It's a condition that is developed either fromgenes or is acquired from the environment though the real cause is still not known. It affects people causing an obsessioneither for a certain action, like cleanliness, checking the lights or gas again and again, or over setting things in completesymmetry. And if that certain action or "Ritual" is not followed feeling of fear, fear that something wrong will happen creepsin and in order to nullify that fear the "ritual" is to be followed. OCD is curable, sometimes it's completely cured others canbe cured significantly through medication or through behavior modification therapy. Though the limits of my disorder werestill unknown. It doesn't have a common manifestation but it had dominated my childhood and the later parts. But my OCDdidn't manifest in the form of obsession with cleanliness, though my sister would have been happy if it was that wayconsidering my current relationship with cleanliness. I would make different sounds within or sometimes I would say certain words out loud or even make a gesture with my hands over and over, it was and still is a tough journey for me. What hurtmore is not that I ruined my school days with the fear of being caught while performing my "Rituals" but that I would findnon-seriousbehavior about OCD even after getting the awareness. I know it ruined my childhood but finding people whotreat OCD as a habit destroys my within now.

After battling between to tell my family or not to tell them about my condition because I didn't know how to tell them,finally decided that I will take a leap of faith and talk to them. They didn't take it seriously. They as usual thought that all ofwhat I did while I was young was my "Habit" like one of those childhood traits and nothing else. I don't consider it theirfault. We as a society have failed to consider different aspects of mental health. For us, if a person visits a psychologist thatmeans either she is mad or going to be. Hardly do we even think about our mental health

seriously and often treat therelationship of our body with our mind for granted. Whenever we see some different behavior either we ignore it or startlabeling it with “Habit”. We fail to understand the reasons behind their “Habit”. While getting to know my childhood buddy,OCD, I could feel my heart broken and tears rolling down my eyes not because it affected me but in contentment that itdidn’t affect me only. I was happy to know that there were other people who happened to go through same. Humans crave for the company especially when they are destroyed. They find it easy to get destroyed by someone else, it is harder to getruined alone. I was one among those humans when I found out about my “labeled” condition. It was easier to accept myselfas a normal person that way. Now it is better to struggle through it knowing other stories. My OCD didn’t destroy me asmuch as the behavior of other’s towards me did. I would be laughed at home or at school. Once a girl sat right next to me onthe school bus intentionally to watch me perform my “ritual” and get something to gossip about. Unlike them who didn’t getthe awareness I want you to be sensitive and educated.

How can you help? Let me tell you. If you find someone rattling through some strange behavior don’t judge them. Don’tbully them. If you cannot help, leave them right where they are. They are suffering enough don’t add to their pain. If youcan’t understand something don’t try to use your self-made analysis on them. I would have been helped if others didn’t laughat me or passed comments on my condition. I wasn’t a quiet kid, I was very vocal, been a class-rep consecutively for morethan two years, I was the class speaker at different festivals but I was also a subject to mockery to many. When I couldn’tdefend myself, I m sure many other’s also can’t. Be sensitive enough to understand the reasons. I hope the darker part of mychildhood will be darker in childhood only. And I hope you understand, and most of all consider others have a problem which is not habitual. After cure what feels good is to get acknowledged and understood.

It is not easy to write about my state but if it helps someone I will write it more than usual since I always had some problems with the mainstream. Be someone’s comfort zone who they can talk to, rely on, discuss their condition with while I battlethrough to find my happy endings and can still laugh when people call me fearless.

धन्यवाद: चकित्सायै (हास्यकणिका)

डॉ० पूजा बुन्देल
संस्कृत विभाग

आगन्तुक: पुरुष: - 'सुप्रभातं वैद्यराज ! भवत: चिकित्सया अहम् उपकृत: इति वक्तुम् अत्र आगतवान् अस्मि'।

वैद्य: - 'एवम् ? किन्तु अहं कदापि भवत: चिकित्सां न कृतवान् खलु' ?

आगन्तुक: पुरुष: - 'सत्यम् । क्षन्तु मम् श्वशुरस्य चिकित्सा भवता एव कृता, यश्च ह्य: परलोकं गतवान्'।

Distortions of virtual world : A mental illness

Jyoti
B.Sc. (H) Mathematics, II Yr

"I fear the day that technology will surpass our human interaction. The world will have generation of idiots." Here, the statement by great scientist Albert Einstein is going to be true .we have reached in a generation where looking at cell phone screen is more important than any other work. We physically present at a place but not mentally. We ignore one another and unaware to our surroundings. Real world has replaced by virtual world .Hence, technology is surpassing our human interaction.

Technology gives birth to this virtual world .A virtual world is a computer – based online community environment that is designed and shared by individuals so that they can interact in a custom – built , stimulated world . Users interact with each other in this stimulated world using text based , two dimensional and three dimensional graphical models called "Avatars". A virtual world is also called " Digital world" .

This humans online interaction has become a part of daily activity.Theycan not live without it even a single day. It has deepened it's impact day by day .Although , it has both cons and pros. Some of the pros are – Users came to know about different types of people and get connects with them or one of the main pros is effective communication . Users can communicate with each other and thus enjoy the conversation between them. It gives a new experience of communicating with the people . We have pros but only when it is used by limit.

Sometimes rumors are murderer of crowd, sometimes spoofing any facial image with fake ID spread the news of the death of alivingstar and sometimes trolling women on social media .We can notignore because these virtual rumors sometimes prove so dangerous.People in this virtual world live beyond the real life and practical reality . It leads to aggressive, chaotic and negligent attitude in humans. This type of virtual rumors have a great impact on the society .They have become a major reason to snatch and curse cordiality of real world . We are going away from our real world.

Social media is a medium to spread social awareness .As, we know that excess of everything is bad . Excessive use of social media leads to addiction. Social media addiction has destroyed hopes formeaningful use of the forums. Deepening effect of virtual world is bringing mental diseases, various mental disorders ,stress , anxiety etc. may lead to deprivation from sleep. It is a medium of socialpshycological disorders rather than meaningful expression . Social media is becoming a major cause of changing behaviour and lost understanding of human beings . People attach emotionally in thisonline based community environment and they feel themselves away from natural environment .They lose interest in everything and find happy with only online interaction. Hence, this has become addictionand may lead to mental illness.

Now, it has become a global problem. According to researchers through-out the world, having too much involvement with virtual world leads to abnormal behaviour and changes in

lifestyle.Excessive involvement of youth in tis virtual world has become a reason of bad impact on education and personal relationships . This of social media is increasing day by day. The conditions have become critical such that people do not show any type of interest in offline activities . The result comes here mental illness.

In coming years, we will have a generation of short-sighted people which means no more productive discussions left in domestic and personal relationships and lack of meaningful conversations inworking place. This lead to lack of trust and understanding among people. The reasons behind these are clear- Facebook ,WhatsApp,Twitter , Snapchat etc. The continuous involvement with these createconditions in which human mind is not able to think in productive and useful direction. In these days, we can see a another addiction of online games like – PUBG, family barn, army war etc. and known as "Gaming disorder". World health organisation involves " Gamingdisorder" in 11th amendment of " International classification of disease" . Gaming disorder is a diagnosis characterized by theuncontrollable and persistent playing of video and computer games.

All these effects of social media shows that till when Social media do not wisely then it becomes a way of losing time and energy. The only solution to deal with this problem that addicts should spend time with their relatives and environment instead of living in virtual world. They will have to learn interact with people face to face. They can become again confident and full of hope .Natural interaction with environment and people is important. Social media should become a reason of change not addiction. If our youths remain psychologically ill then how our country will become a developed one .It is important that we should aware people .Overuse and overthinking is dangerous.

शब्द मेरे हथियार हैं

आलोक सुमन
कला स्नातक (विशेष) इतिहास, तृतीय वर्ष

मैं निकल पड़ा कुछ दिन पहले हथियारों के बाजार में,
थे कई वहाँ औज़ार जो करते वार बिना किसी धार के, सौदागर ने सोचा होगा कैसे मेरा सम्मान करे?
क्या कुछ शस्त्रों के बदले इन हथियारों का बलिदान करे !

वो बोला तू चल साथ मेरे तुझे नई चीज सिखलाता हूँ,
हैं तरकश में कुछ तीर मेरे आजा तुझको दिखलाता हूँ
ये हैं मरहम, अभिमान यही हैं, तेरा आत्म सम्मान यही हैं,
द्रौपदी ने जिससे दुर्योधन का किया कभी अपमान यही हैं,
फैली-सी स्याही का निशान कागज़ पे थोड़ा गाढ़ा था और इन शब्दों के आगे तो सम्राट अशोक भी हारा था ।

मैंने सोचा कुछ देर तलक फिर मन में ये निश्चय कर डाला,
कुछ शब्दों, कागज़ और कलम का मैंने क्रय-विक्रय कर डाला,
मैंने पाया इसके आगे तलवारें भी बेकार हैं, हथियारों की थी बात अलग अब शब्द मेरे हथियार हैं।

घर आ कर मैंने लिखा हर कोने में सड़कें बनती थीं,
और कुछ पगडंडियां काले कोयले में जलती थीं ।
मैंने देखा सड़कों पे फैली परत का रंग भी काला था,
मेरी स्याही भी काली थी, बस जमीर न उसका काला था।
मेरे गाँव की गलियाँ खामोश थी, फिर जाने क्यों चीख रही थीं,
अपनी कब्रों के दाम लिए वो मांग सभी से भीख रही थीं।
मैंने लिखी वो फटी एड़ियाँ, जो मरहम को मोहताज थीं, लेकिन कीचड़ में सनी हुईं वो छुपा रही कई राज थीं।
कृषक यहाँ सूली था लटका, मजे में साहूकार थे,
मैं क्या करता?? लिख ही सकता था, शब्द मेरे हथियार थे।

फिर गाँव छोड़ मैं आया दिल्ली
शहर नहीं शमशान थी ये और जहर भरा था राहों में,
देखी मैंने कुछ नई गाड़ियाँ गलियों में चौराहों में, ये भी देखा कि पैसा है इंसान नहीं बेचारों में।
तकनीकी ने घेर लिया है इनको अपने पाशों में, शायद थोड़ी ही जान बची थी चलती फिरती लाशों में।
मैंने देखे इंसान बहुत जो पुल के नीचे सोये थे, पर सत्ताधीशों को क्या था वो तो सपनों में खोए थे।
मैं सपनों की मशाल लिए कुछ ख़्वाब जगाने आया था,
सुनसान पड़े इस शहर को मैं आवाज़ सुनाने आया था।
पर, नेताजी को ये सपना ये ख़्वाब कभी मंजूर न था,
क्योंकि शायद इन ख़्वाबों में उनको "जी हुजूर" न था।

मेरी बातें कुछ असर कर गयी थीं,
और शायद नेता जी को मेरे लिखने की ख़बर लग गयी थी ।
मैं जान चुका था लिखने से सरकारें भी गिर सकती हैं, ना सोच सका था ये सरकारें इतनी भी गिर सकती हैं !

फिर होना क्या था ??

रात खामोश थी, चाँदनी मदहोश थी, और नेता जी?? अरे उनकी नींद तो किसी महबूबा की बाहों में बेहोश थीं,
हवा तेज़ चल रही थी, हवाओं में साजिशें पल रही थीं
तभी, दरवाज़े पे दस्तक हुई, और दो साये अंदर दाखिल हुए।
मैंने पूछा कि क्यों आये हो क्या मुझसे कोई काम है

वो बोले कठपुतली हैं हम, ये नेता जी का फरमान है।
मैं भागा अपनी कलम उठाने यही मेरी हथियार थी, पहली बार तमंचे आगे कलम मेरी लाचार थी।
मालूम मुझे था मेरी लाश किसी नाले में मिल जाएगी, जब नेता जी की यही थी मर्जी पुलिस भी क्या कर पाएगी।

लेकिन,
तुम बिलकुल फ़िक्र नही करना इस दुनिया के हालात का,
बारिश हर वक़्त नही आती जब मौसम हो बरसात का ।
तुम भी लिखना सरकारों पे क्यों कातिल ये सरकार है?
इन सरकारों से क्या डरना जब शब्द तेरे हथियार हैं।

Life

Muskan Gupta
B.A. (H) Economics, I Yr.

Our life is full of miseries, isn't it?
Well never believe in this shit..
Iknow that we are surrounded by devils,
But don't forget your precious jewels,
Who always stands for you,
When the whole world opposed you they still trusted You,

Those who love you even if you are wrong,
Because they know you realise your mistakes and
need support strong,

There are few incidents due to which you getdepressed,
But never allow your happiness to get suppressed,
Finding good people in this evil world is difficult,
Sowhy don't you become one to make it simple
Learn to be happy in small smal things,
Because these happiness strengthen you against
the deadliest sting,

Clear your mind from all negativity,
Allow goodness to add grace to your beauty,
Make your soul pure as one of a child,
Which is strong enough to melt the heart of a wild,
And my dear friends never loose your beautifulsmile,
May be it's a reason for others to rejoice.

ऐ ज़िन्दगी, थोड़ा थम जा

मृदुल सिंह
विज्ञान स्नातक, भौतिकी विशेष, द्वितीय वर्ष

कहाँ भाग रहे है हम? किस चाह में? किस राह में? देखना कहीं इस भागदौड़ भरी ज़िंदगी में आप अपने अपनो को न खो दे । कही आप अपने आप को न खो दे। हर सुबह सूरज के उगते ही और हर शाम चाँद के आने तक आप भागते रहते हो दौड़ते रहते हो।

हाँ मैं जानता हूँ कि आपको अपना लक्ष्य पूरा करना है, उस ऊँचाई तक पहुँचना है, लेकिन थोड़े समय के लिए थमकर देखिये अच्छा लगेगा। उन व्हाट्सएप्प के 265 कॉन्टेक्ट्स को छोड़कर घर में बैठी बूढ़ी दादी से बात करकर देखिये अच्छा लगेगा।

क्यों आपको नही लगता कि फेसबुक में 540 फ्रेंड्स जिन्हें आप अच्छे से जानते भी नहीं उनकी फोटो को लाइक और कमेंट करने के बजाय अपने पुराने एक-दो दोस्त से बात कर ली जाए। कितना समय हो गया है ना जब आपने अपनी कक्षा के सबसे अच्छे दोस्त से बात नही की? हाँ मैं जानता हूँ की इन दिल्ली मेट्रो और डी.टी.सी बस में ही सारा समय चला जाता है, लेकिन एक बार बस स्टॉप और मैट्रो प्लेटफार्म में कुछ लम्हा निकालकर उनसे बात करकर देखिए उसे अच्छा लगेगा। उस पुराने दोस्त से बात करने के बाद जो खुद से खुद को पाओगे आपको भी अच्छा लगेगा। आपको वो सुकून मिलेगा जो डी.टी.सी बस में धक्के खाते और मैट्रो प्लेटफार्म में भागते हुए आपने खो दिया है।

क्या आपको याद है कि आपने अपने नाना-नानी से मुलाकात कब की थी? नही याद! कोई बात नही! फ़ोन में तो बात की ही होगी? ओह वो भी नही याद! थोड़ा समय निकालकर उनसे बात करके देखिये उन्हें अच्छा लगेगा, क्या पता अपनी उम्र के कुछ अंतिम वर्षो में वो आपको कुछ अच्छा बता जाए या अच्छा सीखा जाए।

उन कॉलेज या ऑ फस में दोस्तों के साथ तो हर रोज़ खाना खाते हैं, कभी कभार अपनी मम्मी और पापा के साथ खाना खाकर देखिये उन्हें अच्छा लगेगा। उससे जो आपको खुशी मिलेगी वो शायद ऑफिस की फाइल्स में न जाने कब छुप गयी है। थोड़ी देर के लिए थम जाओ, ठहर जाओ, रुक जाओ क्योंकि आपको भी पता है और मुझे भी कि इस भागदौड़ में पूरी ज़िंदगी निकल जायेगी पर सुकून नही मिलेगा। काश थोड़े समय के लिए सब थम जाए ये बस, ये मैट्रो और हाँ हम भी और फिर बात करे अपने अपनो से और हाँ अपने आप से भी।

'ऐ ज़िन्दगी, थोड़ा थम जा,
मुझे मेरे अपनो से मुलाकात करनी है!'

अवसरम्

डॉ० पवित्रा अग्रवाल
संस्कृत विभागः

एकदा केनचित् कलाकारेण स्वचित्राणां प्रदर्शनं स्थापितम् । तं प्रदर्शनं द्रष्टुम् अर्थपूर्णाः नागरिकाः अभ्यागताः । तेषु दर्शकेषु एका कन्या अपि आसीत् । सा दृष्टवती यत् सर्वेषां चित्राणामन्ते कस्यापि मनुष्यस्य तादृशं चित्रमस्ति, यस्य मुखं केशावृत्तम् अस्ति तथा चरणयोः पक्षाः बद्धाः सन्ति । चित्रस्य अस्य नामकरणमपि चित्रकारेण 'अवसर' इति नाम्ना कृतम् आसीत् । चित्रस्यास्य ग्राम्यताकारणात् जनाः इदम् उपेक्षितावन्तः । किन्तु सा कन्या दीर्घकालं यावत् चित्रमिदम् अवलोकितवती ।

चित्रकारेण निरीक्षितं यद् कन्यायाः अवधानं तस्मै चित्राय अस्ति । तेन सा पृष्टा यत् - पुत्रि! चित्रेऽस्मिन् किं तव आकर्षणाय अस्ति । कन्यया सः पृष्टः यत् - किमर्थं त्वया अस्य मुखावरणं कृतम्? चित्रकारेण उक्तं यत् - बालिके! सर्वेषां जनानां जीवने अवसरः आगच्छति प्रेरयति च, किन्तु जनाः स्वमुखं आवृत्य अवसरमेव नाशयन्ति यथा चित्रे वर्णितम् अस्ति । ये अवसरम् अभिजान्ति ते एव जीवने किञ्चित् प्रतिपादयन्ति ।

बालिकया सः चित्रकारः पुनः पृष्टः – अस्य चरणयोः बद्धानां पक्षाणां किं रहस्यम्? चित्रकारेण स्पष्टीकृतं यत् - अवसरः यदि व्यतीतः न पुनः प्रत्यागच्छति । अतः अवसरस्य सदुपयोगः एव श्रेयस्करः सार्थकश्च । सा बालिका चित्रकारस्य तात्पर्यं विज्ञाय उन्नतिपथे अग्रसरा अभवत् ।

(सार : - एक बार एक कलाकार ने अपने चित्रों की एक प्रदर्शनी लगायी । उस प्रदर्शनी को देखने उस नगर के अनेक धनाढ्य लोग भी पहुंचे । प्रदर्शनी देखने वालों में एक लड़की भी थी । उसने देखा की सब चित्रों के अन्त में एक ऐसे मनुष्य का चित्र भी टंगा है जिसका मुंह बालों से ढका हुआ है । उस मनुष्य के पैरों पर पंख लगे थी । चित्रकार ने उस चित्र का नामकरण 'अवसर' किया था । चित्र कुछ भद्दा सा था इसलिए लोग उसपर उपेक्षित दृष्टि डालकर आगे बढ जाते थे परन्तु वह लडकी उसी चित्र को ध्यान से देखती रही । चित्रकार इस बात को ध्यान से देख रहा था कि उस लडकी का ध्यान चित्र की ओर है । चित्रकार ने उस लडकी के पास जाकर पूछा - बेटी! इस चित्र में तुम्हें क्या आकर्षित कर रहा है? लडकी ने कहा – आपने इस व्यक्ति का मुंह क्यों ढक दिया? चित्रकार ने कहा – बेटी! इस चित्र की भांति अवसर हर मनुष्य के जीवन में आता है और उसे आगे बढने की प्रेरणा भी देता है परन्तु इस मनुष्य की तरह लोग अपने चेहरे को ढक कर बैठे रहते हैं और अवसर को गंवा देते हैं । जो अवसर को पहचान पाते हैं वे ही जीवन में कुछ कर पाते हैं ।
लडकी ने पूछा – इसके पैरों में लगे पंखों का क्या रहस्य है? चित्रकार बोला- जो अवसर आज चला गया वो लौटकर वापस नहीं आता। इसलिए अवसर का सदुपयोग करने में ही सार्थकता है । वह लडकी चित्रकार की बात का अर्थ समझ गयी और जीवन में आगे बढने की प्रेरणा प्राप्त की ।)

कलीम आजिज़ ----------

रखना है कहीं पाँव तो रक्खो हो कहीं पाँव
चलना ज़रा आया है तो इतराए चलो हो

खुद की अहमियत

अजय
कला स्नातक, कार्यक्रम, द्वितीय वर्ष

खुद की अहमियत क्या आज कोई जानता है?
क्या आज कोई अपने आप को पहचानता है?
खुद को खुदसे मिलवाता है?
हर शाम खुद के लिए रंगीन गाना गाता है?
क्या खुद को हसाता है?
खुद को दर्पण में देख मुस्कुराता है?
स्वयं को स्वयं का एहसास दिलाता है?
शरीर में आत्मा का वर्चस्व महसूस कराता है?
या मन को कभी सही दिशा से रूबरु कराता है?
अपने काम इंद्रियों को उनके कर्मों का दर्शन कराता है?
क्या कभी देर-सवेर स्वयं, स्वयं के साथ हँसी के लम्हें बिताता है?
क्या कभी खुद से वादा कर उसे निभाता है?
क्या कभी खुद वर्तमान की स्थिति नाप कर मुस्कुराता है?
या भूत और भविष्य देख डर जाता है?
क्या कभी सोचा है खुद के बारे में?
या करियर की सोच डर जाता है?
दूसरो को गूगल सर्च और विकीपीडिया पढ़ते जाता है
क्या कभी अपनी विकीपीडिया बनाता है?
दूसरो को खुश करने में लगे रहता है
क्या कभी अपने को खुश करने के कदम उठाता है?
दूसरो के नजरों में उठने के लिए
ना चाहते हुए भी कुछ काम कर जाता है
खुद के नजरों में क्यूँ खलनायक बन जाता है?
जब दूसरो को ईर्ष्या भरी नजरों से देखता है तो
क्या कभी वो नजरें खुद पे भी उठाता है?
किताबे, अखबार तो समय-समय पर पढ़ते जाता है
क्या कभी खुदको पढ़ने के लिए समय निकाल पाता है?
लोग यहां हर रिश्ता निभाते हुए दिखा सकते है, दोस्ताना हो याप्याराना
मगर स्वयांना नहीं
रिश्ते, नाते, दोस्ती, प्यार को तो निभाता है
मगर क्या स्वयांना निभाता है? या उस से कभी डर जाता है?
दूसरो की नजरों से खुदको क्यूँ आकता है?
अपने नजरों को काम में क्यूँ नहीं लगाता है?

समाज में साहित्य की आवश्यकता

प्रियांक त्यागी

कला स्नातक, कार्यक्रम, प्रथम वर्ष

कहा जाता है कि साहित्य समाज का दर्पण होता है। अर्थात् समाज साहित्य को विषय प्रदान करता है जिन पर साहित्यकार अपनी कलम चलाता है और साहित्य समाज की समीक्षा कर सही व नई दिशा प्रदान करता है। इस प्रकार दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं। चूंकि दोनों एक दूसरे के पूरक हैं, इससे ये बात स्वतः सिद्ध हो जाती है कि समाज को साहित्य की आवश्यकता तो है। समाज की इस आवश्यकता को तब और बल मिलता है जब हम इतिहास पर नजर डालते हैं। जब-जब समाज मे क्रांतिकारी परिवर्तन आया उसके पीछे साहित्य की महत्वपूर्ण भूमिका थी। चाहे वह समय गुप्तकाल का हो या भारतीय नवजागरण का या यूरोपीय पुनर्जागरण का हो। हर समय के परिवर्तन मे साहित्य ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाकर समाज को नई दिशा दी।

समाज मे रहने वाले व्यक्ति का एक स्वाभाविक गुण है कि वह अपने से अधिक विद्वान (लेखक आदि) की बातों सत्य मानते हुए पालन करता है। इसी कारण जब कोई व्यक्ति साहित्य पढ़ता है तो उस साहित्य पर व्यक्ति का प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष प्रभाव व्यक्ति पर दिखाई देता है।

यूरोपीय समाज जब सुप्त अवस्था मे था तब इटली से साहित्य की नींव पर पैदा हुए पुनर्जागरण ने ही यूरोप को आधुनिक बनाया। और उसी आधुनिकता ने औद्योगिक क्रांति पैदा कर यूरोप को विश्व शक्ति बनाया, उस दौर मे। इस पुनर्जागरण मे मार्टिन लूथर, ज्विंग्ली, कांट, मिल्टन, मैकियावेली आदि के साहित्य ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उसी साहित्य को पढ़कर ही व्यक्ति ने तर्क को धर्म के ऊपर प्राथमिकता देकर पाखंड और आडंबर से मुक्ति पायी। जब हमारा देश मुगलों की गिरफ्त से निकलकर अंग्रेजों के हाथों मे जा रहा था तब समाज मे जातिवाद,छुआछूत,अस्पृश्यता, सती प्रथा आदि अपने चरम पर थी। इसी दशा मे साहित्य के सहारे पुनर्जागरण खड़ा हुआ। पुनर्जागरण मे नवीन साहित्यकारों (राम मोहन राय, दयानंद सरस्वती, स्वामी विवेकानंद, ज्योतिबा फूले, विद्यासागर आदि) ने साहित्य लिखा। इस साहित्य को तत्कालीन युवा पीढ़ी ने पढ़कर न केवल स्वयं को रूढ़िवादिता से मुक्ति दिलाई अपितु समाज को जागृत करने के लिए भी आगे बड़े।

20वीं सदी के भारतीय स्वतंत्रता संग्राम मे साहित्य को पढ़कर व सुनकर अनेक क्रांतिकारी पैदा हुए। उस सदी के साहित्यकारों मे प्रेमचंद, गुप्त, दिनकर, अज्ञेय, द्विवेदी जी आदि थे। कई लेखकों ने तो लेखन के साथ साथ क्रांतिकारी गतिविधियां भी की। साहित्य से निकलने वाले देशभक्ति के प्रभाव को देखते हुए कई साहित्यकारों की प्रतियों को जब्त कर लिया गया ; उदाहरण के लिए प्रेमचंद की सोजे वतन नामक

पुस्तक। साहित्यकारों के साहित्य ने क्रांति की लौ को तीव्र बनाए रखा और परिणामस्वरूप समाज से गुलामी रूपी अंधकार छट गया। इस प्रकार साहित्य ने समाज को एक नई दिशा दी।

साहित्य की प्रासंगिकता आज भी शाश्वत है। उदाहरण के लिए वर्तमान समय की वामपन्थी विचारधारा व उनके आंदोलन पूरी तरह से साहित्य से ही सिंचित हैं। हमारी आजादी से वर्तमान समय तक कई सामाजिक समस्याओं से लड़ते हुए काफी हद तक सफलता प्राप्त की है। उदाहरण के लिए महिला सशक्तिकरण, दहेज-प्रथा,दलित-शोषण, अस्प्रश्यता आदि ऐसी ही समस्या है जिनसे लड़ने के लिए बहुत हद तक जागरूकता साहित्य से भी मिली।

अंततः हम यह कह सकते हैं कि समाज मे साहित्य की आवश्यकता है क्योंकि शिक्षा दुनियां को बदलने का सबसे ताकतवर और कारगर हथियार है। चूंकि शिक्षा व साहित्य एक दूसरे से जुड़े हैं इसलिए साहित्य सामाजिक विकास का सेतु है। समाज मे साहित्य की भूमिका ठीक वैसी ही है जैसी कि छात्र के जीवन मे शिक्षक की। शिक्षक कोयलारूपी अज्ञानी छात्र को तरासकर हीरा बनाता है तो वहीं साहित्य समाज का शुद्धिकरण कर उसे संतुलित व दूरदर्शी बनाता है।

मंज़िल की ओर मैं बढ़ा करती हूँ

नेहल अग्रवाल

कला स्नातक (विशेष), राजनीति विज्ञान, प्रथम वर्ष

छलनी तन मन छलनी चितवन
पर अटुट मन है मेरा ।

रेतिले जहाज़ - से मन को लिए
आँचल से सिसकी चली आई हूँ
नये शहर कि बिजली में मैं
दीये - से मन को इत्तला करने आई हूँ,
मंज़िल को पाने आई हूँ ।

घर की नब्ज़ से दूर निकलती हुई
दुनियादारी के पुष्ट चीर से सियासत करती हुई
मंज़िल के रूह की आस लिए
लहू कि हर बुंद को आघोष करती हूँ,
इंतकाल को अब मैं छलनी किया करती हूँ ।

गुज़रती हुई इन तंग गलियों से
मन को और बड़ा करती हूँ
सूक्ष्म - सूक्ष्म टूटे ख्वाबो कि गाथा लिए
आने वाले सफर को इत्तला करती हूँ
अपने कल को अब मैं खुद बुना करती हूँ ।

जबरन मंच भले अब सज जाए
आंधी को संग लिए बरसा आए
बिजली कि कड़कड़ाती शक्ति - सी लहरों से
महोबा के बुंदेलो - सी लड़ा करती हूँ
प्रलय को देख अब न वापस मुड़ा करती हूँ
खुद से ही जंग लड़ा करती हूँ
मंज़िल को अब मैं इत्तला करती हूँ ।

घनघोर सावन की घटा - सी मैं
पत्थरों के बीच आनन - फानन लकीर - सी गुज़रती हूँ,
रह - रह कर अब खुदको इत्तला करती हूँ,
मंज़िल की ओर मैं बढ़ा करती हूँ ।

अभी ज़िंदा हूँ

रूपम शुक्ला
विज्ञान स्नातक(विशेष), रसायन विज्ञान, प्रथम वर्ष

लाख गिराया आसमान से, खंजर लाख घुसाए हैं,
किया जिन्हें बेगाना सबने, वही गैर मैंने अपनाए हैं,
गिरा कितना मैं नभों से, फिर उड़ूंगा मैं परिंदा हूँ,
बरसाए सितम इस दुनिया ने,पर मैं अभी भी ज़िंदा हूँ।

चलता रहा जो मैं पथों पे, कंकड़ों से टकराता रहा,
हार ना मानी फिर भी मैंने,कदम अपने बढ़ाता रहा,
पैर में छाले पड़ते रहे पर,कदम न मैंने रोके थे,
उन लोगो को दिखलाना था,जिनसे खाए कुछ धोखे थे।

उड़ता रहूंगा देखेंगे सब, इक आज़ाद परिंदा हूँ,
करते रहो जो कर सको तुम, मैं कहूंगा कि मैं ज़िंदा हूँ।

जब आसमां अपना बना लूंगा, तब मैं भी गुनगुना लूंगा,
मंज़िल से पहले रुक जाऊं , शौक न ऐसा पालूंगा,
तुम औरों में खुशियां ढूंढते रहना, मैं खुदमे मुस्कुरा लूंगा
तुम दुनिया जहां में फिरते रहना, मैं वक्त को दोस्त बना लूंगा।

हाथ ना आऊंगा मैं तुम्हारे, उड़ता हुआ परिंदा हूँ,
मैं कल भी सांसें लिया था करता, मैं आज भी देखो ज़िंदा हूँ।
मैं आज भी देखो ज़िंदा हूँ.....

आत्मजयः

डॉ० पवित्रा अग्रवाल
संस्कृत विभागः

अंकमालः भगवतः बुद्धस्य समक्षम् उपस्थितः उक्तश्च- "भगवन्! अहं जनानां सेवाकरणम् इच्छामि । भवान् यत्र कुत्रापि माम् प्रेषयितुम् इच्छति, अहं तदेव स्थानं गत्वा जनान् कृते धर्ममार्गं दर्शयिष्यामि इति ।" बुद्धेन विहस्य उक्तम् – तात! संसाराय दानात् पूर्वं स्वपार्श्वेऽपि तु किञ्चित् भवेत् इत्यावश्यकम् अस्ति । गच्छ! संसार सेवायाः प्राक् स्वयोग्यतां वर्धयतु । अंकमालः ततः गत्वा विभिन्नानां कलानां अभ्यासे संलग्नः जातः । शरनिर्माणम्, चित्रनिर्माणं, मल्लविद्या नौकाचालनञ्च सर्वाः कलाः अंकमालेन दशवर्षाणि यावत् अभ्यसताः । सः सर्वत्र कलाविशारदनाम्ना विख्यातः ।

स्वप्रशंसाप्रसन्नः सः पुनः तथागतसमक्षम् उपस्थितः, उक्तश्च- भगवन्! अधुना अहं सर्वेभ्यः किञ्चित् शिक्षयितुम् अधिकृतोऽस्मि, यतो हि चतुःषष्ठिकलानां पण्डितोऽस्म्यहम् । भगवता उक्तम् – भवता कलाः शिक्षिताः तासां परीक्षणं तु स्यात् । अग्रिमे दिने बुद्धः साधारणजनरूपेण अंकमालम् उपगत्य तं तर्जितवान् । अंकमाल क्रुद्धः सन् प्रहाराय उद्यतः, किन्तु बुद्धः स्मितं कृत्वा प्रत्यागतः । अग्रिमे दिने बौद्धश्रमणौ परिवर्तितवेशौ अंकमालम् उपगत्य उक्तवन्तौ- आचार्य! महाराजेन हर्षेण भवते मन्त्रीपदं प्रदानम् इष्टम्, किं भवान् स्वीकरिष्यति? अंकमालः लुब्धः सन् उक्तवान् –आम् आम् इदानीमेव चलन्तु । उत्तरं विज्ञाय श्रमणौ प्रत्यागतौ । किञ्चत् कालपश्चात् भगवान् बुद्धः उपस्थितः आम्रपालसहितः । अंकमालः तामेव सरागपूर्णाभ्यां नेत्राभ्याम् अवलोकितवान् ।

संध्यावसरे बुद्धेन सः आहूतः पृष्टश्च – वत्स! त्वया सर्वाः विद्याः शिक्षिताः, किन्तु काम-क्रोध –लोभ-अहंकारजयो न शिक्षितः । अंकमालेन सर्वं स्मृत्वा लज्जया शिरः नत्वा आत्मविजयसाधनायां रतः ।

(सार : - युवक अंकमाल भगवान बुद्ध के सामने उपस्थित हुआ और बोला- भगवन् ! संसार की सेवा करने की मेरी इच्छा है । आप मुझे जहाँ भी भेजना चाहें भेज दें । जिससे मैं लोगों को धर्म का मार्ग दिखा सकूं । बुद्ध हसकर बोले- तात! संसार को कुछ देने से पहले स्वयं के पास कुछ होना आवश्यक है । पहले अपनी योग्यता बढाओं तब संसार की सेवा करना । अंकमाल वहां से चला गया और भिन्न-

भिन्न कलाओं के अभ्यास में लग गया। बाण बनाने से लेकर चित्रकला तक, मल्लविद्या से नौका चलाने तक जितनी भी कलाएँ हो सकती हैं उन सभीका उसने दस वर्षों तक निरन्तर अभ्यास किया तथा कलाविशारद के रूप में ख्यातिप्राप्त हुआ।
अपनी प्रशंसा मे मुदित होकर वह पुनः तथागत के समक्ष उपस्थित हुआ और बोला - प्रभु! मैं चौसठ कलाओं का पण्डित हूँ तथा अब मैं ससार के प्रत्येक व्यक्ति को कुछ न कुछ सिखाने की योग्यता रखता हूँ। भगवान बुद्ध मुस्कुराये और बोले – अभी तुम जो सीखकर आये हो पहले उसकी परीक्षा दो। अगले दिन बुद्ध एक साधारण नागरिक बनकर अंकमाल के सम्मुख गये और उसे खरी-खोटी सुनाने लगे। क्रोधित होकर अंकमाल उन्हें मारने दौडा तो बुद्ध मुस्कुराते हुये वापस लौट आये। अगले दिन दो बौद्ध श्रमण अंकमाल के पास गये और बोले – आचार्य! आपको सम्राट हर्ष ने मन्त्री पद देने की मंशा व्यक्त की है क्या आप उसे स्वीकार करेंगे? अंकमाल लोभ में आ गया तथा बोला- हां हां अभी चलो। यह सुनकर दोनों श्रमण वापस लौट गये। थोडी देर बाद भगवान बुद्ध आम्रपाली के साथ उपस्थित हुये। अंकमाल आम्रपाली को देखता रह गया। सांयकाल भगवान बुद्ध ने अंकमाल को पुनः बुलाया तथा पूछा – वत्स! तुमने सभी विद्याएं सीख ली किन्तु क्या तुमने काम,क्रोध,लोभ और अहंकार पर विजय की विद्या सीखी? अंकमाल को विगत सभी घटनायें याद आ गयी। उसने लज्जा से सिर झुकाया और आत्मविजय की साधना में लग गया।)

डी.टी.सी.

शिवानी
कला स्नातक, हिन्दी विशेष, तृतीय वर्ष

दिल्ली की दौड़ती ज़िन्दगी का
सबसे अहम जरिया
भोरे पाँच बजे से रात ग्यारह चालीस तक
सड़को पर दौड़ती
दिल्ली की दौड़ती-भागती
ज़िन्दगी को पूरा करती
किन्तु मुझको अधूरा
कभी किसी के पैरों का लगना
पोरों का लगना
कभी किसी का जंघाएँ छूना
कभी कमर में धीरे से हाथ
कभी पीछे से लगते लिंग का अंग
और इन सब का एक जवाब
भीड़ है...
सहारे के लिए पकड़े गए हाथ
भीड़ का फायदा उठाने वाले हाथ
भिन्न होतें हैं
एक जवाब और है
खड़े होने पर ये सब सम्भव है

सच मानिए!
बैठ कर भी कुछ नहीं सम्भव है
महिला सीट पड़ बैठ कर भी
जब तक हाथ -
खिड़की के डंडा ना छू पाएं
असुरक्षित हैं मेरी जंघाएँ
कमर
और मैं
और अंत में इन सब का एक जवाब
भीड़ है....
भरी बस में
एक स्त्री-पुरुष का चुम्बन
ना बर्दास्त करने वाली सभ्यता
मेरे यौन शोषण पर भीड़ को
इल्जाम देती है
पहले सवाल था
तुम बोलती क्यों नहीं हो
आज सवाल है
तुम मानते क्यों नहीं हो
ये जो सब कुछ मैं महसूस कर रहीं हूँ
वो बेवजह नहीं है
मेरी बात में छुपे वजह को
तुम स्वीकार तो करो
तो आगे से जब कहूँ
थोड़ा दूर खड़े हो जाओ
एक बार ना कहना
भीड़ है
बस कोशिश कर लेना
हो जाना
क्योंकि मैं जो महसूस कर रही हूँ
वो बेवजह नहीं है
डी. टी. सी. में भागती जिंदगी को
मेरी ज़िंदगी भी पूरी करने दो।

नारीणाम् उत्थाने समर्पिता साधिका

डॉ० पूजा बुन्देल
संस्कृत विभाग

"विधवा" इति विधातृविधानम् अस्ति। पित: ! एतद् विधानं मिथ्या भवितुं नार्हति। इदानीं रोदनेन क: लाभ: ? अहम् एतया विपत्त्या सह ससाहसं सङ्घर्षं करिष्यामि।

कथं भवेत् एतत् सर्वम्, पुत्रि ! पिता अत्यन्तं व्यग्र: सम् प्रश्नं कृतवान्। उत्तरम् आसीत् अहं स्वपद्भ्याम् उत्थातुं परिश्रमं करिष्यामि इति। एतस्मिन् उत्तरे दृढसङ्कल्प: आसीत्। किन्तु पितु: विश्वास: नास्ति। स: स्वपुत्रा: अन्धकारमयस्य भविष्यकालस्य कल्पनामात्रेण कम्पमान: आसीत्। परन्तु त्वं स्वपदे कथं स्थातुं शक्नोषि ? इति अस्मिन् पितु: शब्दे वेदना निराशा च परिलक्ष्यते स्म।

अहं अध्ययनं करिष्यामि, पठिष्यामि। जीवने अग्रेसरा भविष्यामि। विषमपरिस्थित्या सह दृढतया सङ्घर्षं करिष्यामि। युवति: एतत् सर्वं धैर्येण सह कथयन्ती आसीत्।

किन्तु पुत्रि ! समाज: एतादृश: न, त्वं पङ्कस्य स्पर्शात् निजं रक्षितुं शक्नुया: ? इति पित्रा सात्त्विकं भयं प्रकटितम्।

पित: ! भवान् व्यर्थम् आतङ्कित (आशङ्कित) भवति। किं स्वपुत्र्यां विश्वास: नास्ति। परिस्थित्या सह समाधानं मया कदापि न कृतम् न च करिष्यामि। पुरुषार्थ: परिश्रमश्च एतौ मम् आश्रयौ। एताभ्याम् अहं जीविष्यामि। पुत्र्या: साहसयुक्तानि वचनानि श्रुत्वा स्वपुत्रीम् अधिकं पाठयितुं निश्चयं कृतवान्। युवत्या: नाम आसीत् कमला। 'कमलादेवी' गृहिण्या: विधवाया: वेशं परित्यज्य छात्रवेशं धृतवती। पठनेन सह स्वराज्यस्य आन्दोलने भागं गृहीतवती। समाजे विधवानां दीनानां दयनीयां दशां दृष्ट्वा विचलिता भवति स्म। कमलादेवी रूढीवादस्य अवमानं स्वयं कुर्वती विधवानामपि प्रेरणां दत्तवती। परिवारस्य विरोधे सति अपि स्वकार्यक्षेत्रस्य परिधे: विस्ताराय कमलादेवी प्रतिभासम्पन्नेन लेखकेन कुशलराजनीतिज्ञेन हरिश्चन्द्रनाथचतोपाध्यायेन सह विवाहं कृतवती। नारीणाम् उत्थाने समर्पिता कमलादेवीचटोपाध्यायनाम्ना प्रसिद्धा जाता। अन्त:समये तया आकाङ्क्षा कृता आसीत् – "अहं भारतीयनारीणां प्रगतिम् उच्चशिखरम् आरूढां द्रष्टिमिच्छामि"। आधुनिके भारते तस्या: स्वप्न: साकार: भवन् दृश्यते।

(सारांश – कमलादेवी अल्पाअयु में ही विधवा हो गई थीं। उन्होंने अपने पिता से कहा – मैं इस विपत्ति का साहस से सामना करुंगी। मैं अध्ययन करुंगी, पढ़ूंगी। अपने पैरों पर खडी होकर परिश्रम करुंगी और जीवन में आगे बढ़ूंगी। उनकी इस बात में दृढसंकल्प था किन्तु उसके पिता को विश्वास नहीं था। पिता ने कहा – पुत्री, तुम इस कीचड के स्पर्श से अपनी रक्षा कैसे करोगी ? कमलादेवी ने कहा – आप व्यर्थ में ही आशंकित हो। क्या आपको अपनी पुत्री पर विश्वास नहीं ? पुरुषार्थ और परिश्रम ये दो ही मेरे आश्रय है। पुत्री के ये साहसयुक्त वचन

सुनकर उसके पिता ने उसे आगे पढाया। पढाई के साथ कमलादेवी ने अपने राज्य के आन्दोलन में भी भाग लिया। समाज में विधवामहिलाओं की दयनीय दशा को देखते हुए उनके लिए प्रेरणास्रोत बनीं। कमलादेवी ने प्रतिभासम्पन्न लेखक और कुशल राजनीतिज्ञ हरिश्चन्द्रनाथचटोपाध्याय से विवाह किया। नारियों के उत्थान के लिए समर्पित कमलादेवीचटोपाध्याय के नाम से विख्यात हुईं। उनकी अन्तिम इच्छा थी कि मैं भारतीय नारियों को प्रगति और उच्चशिखर पर देखूं। आधुनिक भारत में उनका ये स्वप्न साकार होते हुए दिखाई दे रहा है।)

संसद की सैर

क्षितिज भट्ट

कला स्नातक (विशेष), राजनीति विज्ञान, प्रथम वर्ष

7 फरवरी को कॉलेज की तरफ से संसद भवन जाने का मौका मिला पर व्यस्तता के चलते अब तक कुछ लिख नहीं पाया और साथ ही पहले ही फोन जमा हो जाने के कारण ना कुछ तस्वीरें खींचपाया। हाँ, इतना जरूर है कि हर लम्हा जेहन में कैद हो गया है।

अब शुरू से शुरूआत करते हैं।

6 फरवरी को ही ये फ़ाइनल हो गया था कि हमें अगले दिन पार्लियामेंट हाउस जाना है तो उसी वक्त से रोमांच हिलोरे मारने लगा था। मैं और मेरे कुछ दोस्त क्लास के अंदर 'संसद चलो' नारों के अंदाज में चिल्लाने लगे थे हालांकि हमें ना संसद का घेराव करना था और ना ही कोई धरना प्रदर्शन।

फिर 7 फरवरी की शाम वो लम्हा आया जिसका हमें इन्तजार था। लगभग शाम के 3:15 बजे हम केंद्रीय सचिवालय मेट्रो स्टेशन के गेट नंबर 5 के बाहर इन्तजार करते हमारे डिपार्टमेंट के सभी अध्यापकों से मिलें। इस से ठीक कुछ ही पल पहले मैंने एक्जिट गेट के बाहर एक कुत्ते के साथ पहरा देते कुछ सुरक्षाकर्मियों की तस्वीर लेने की कोशिश की तो उन्होनें कहा - 'आप लोग अपना काम कीजिए, हमें हमारे हाल में ही छोड़ दीजिए।'

अब उस समय पर वापस आता हूँ जब हम शिक्षकों से मिले थे। उनसे मिलने के बाद कुछ देर सेल्फी और तस्वीरों का दौर चला तत्पश्चात सभी के फोन जमा कर दिए गए। फ़र्स्ट इयर के फोन मैं ही जमा कर रहा था तो जमा करने के बाद मजाक में कहने लगा. - 'अब ये फोन चोर बाजार ले जाए जाएँगे और इतनों को बेचकर तो नए फोन का इन्तजाम हो ही जाएगा।' इसके बाद कुछ और दोस्त भी इसमें शामिल हो गए और कहने लगे. - 'प्रॉफिट 50-50 बाँट लेंगे।'

थोड़ी देर तक ये हँसी मजाक चलता रहा और उसके बाद फोन प्रोफेसर्स की गाड़ी में रख दिए गए।

इसके बाद हम सभी लाइन में संसद भवन की दिशा में चले और अभी संसद की पहली सिक्यूरिटी चैक से गुजरे ही थे कि बारिश शुरू हो गई। हमने एक जगह शरण ली। थोड़ी देर में प्रोफेसर्स भी वहाँ आ गए। हम फिर आगे बढ़े। संसद के मुख्य सभागार तक पहुँचने से पहले हमें तीन बार सिक्यूरिटी चेकिंग से गुजारा गया जिसमें अंतिम चेकिंग के दौरान बस पास, मेट्रोकार्ड और रूमाल तक जमा कर दिया गया। संक्षेप में, बस एक आई डी कार्ड हमारे पास रहने दिया गया।

अंतिम चेकिंग के बाद जब हम आगे बढ़े तो भीड़ के कारण कुछ देर एक स्थान पर रुकना पड़ा जहाँ संसद भवन की छत पर संस्कृत का एक श्लोक उद्धृत था -.

'नसासभायत्रनसन्तिवृद्धाः
वृद्धानतेयेनवदन्तिधर्मं।
नासौधर्मोयत्रनसत्यमस्ति
नतत्सत्यंयच्छलेनानुविद्धम्॥'

इससे आगे बढ़े तो चेहरों का मिलान किसी डेटा से किया गया पर वो क्या था ये समझ नहीं आया पर उसके बाद हम जहाँ थे वो सच में सुख देने वाला था क्योंकि हम मुख्य भवन के ठीक सामने कतार में खड़े थे।

ऊपर मिला सुख थोड़ी देर में ही काफूर हो थकान में बदलने लगा क्योंकि इन्तजार लम्बा था और हम लाइन में खड़े रहने को मजबूर थे, जबक़ दिल कर रहा था क़ अन्दर चले जाएँ। इस बीच एक ऐसी घटना हुई जिसे विशेष रूप से उल्लेखित करना चाहूँगा। हमारे दो साथी अचानक एवं अनायास ही अंग्रेजी में बात करने लगे और फिर उनमें से एक ने दूसरे से मुखातिब होकर कहा. - 'इट सीम्स सो एम्बेरेसिंग टू स्पीक इन हिन्दी हेयर!' मन तो उसी वक्त हुआ था कि टोक दूँ पर आगे से ना बोलने के इंस्ट्रक्शन्स लगातार मिल रहे थे तो चुप रहना ही मुनासिब समझा। इस तरह की बात से मन खट्टा हुए कुछ ही देर हुई थी कि अन्दर से बुलावा आ गया मतलब हमारे स्लॉट का टाईम हो गया था। अंदर प्रवेश करते वक्त मन में रोमांच फिर हिलोरे मारने लगा था और बैठने के बाद तो रोमांच अपने चरम पर पहुंच गया।

अंदर के हर नजारे को आँखें कैद करने को बैचैन थी, हर वक्ता को सुनते वक्त यूँ तो उसकी तस्वीर सामने स्क्रीन पर आ रही थी पर तब भी आँखें उसे बाकी सांसदों के बीच ढूँढ रही थी। इस सब में यदि ढूँढ लिया तो एक विजय सा आभास हो रहा था और असफल होने पर मन खुद ही को कोस रहा था क़ ये कैसी सीट पर बैठ गया।

वक्ताओं के अतिरिक्त भी आँखें अंदर के अन्य माननीयों को पहचानने का प्रयास कर रही थी और इस क्रम में कई चेहरे पहचाने लग रहे थे। विशेषतः जिस व्यक्ति को देखकर प्रसन्नता हुई थी वो थे अल्मोड़ा. नैनीताल लोकसभा सीट से सांसद श्री अजय टमटाजी, उन्हें देखने के बाद

एक अपनेपन का अहसास हो रहा था पर एक बात चुभी भी कि पूरी कार्यवाही के दौरान वे मात्र मूक दर्शक बने रहे।

अजयजी चाहे चुप थे पर हमें अन्य कई 'माननीयों' को सुनने का अवसर मिला, उनमें से कुछ पहचाने गए और कुछ नहीं, पर जिनका वक्तव्य सबसे बेहतर लगा वो थे ओवैसी। उर्दूभाषा पर उनकी पकड़ दिल छू गयी थी। लेकिन मात्र ओवैसी ही बेहतरीन नहीं थी, उनको दिया गया सुषमा स्वराज का उत्तर भी उत्कृष्ट था जिसे सुनने के बाद ये विचार आ रहा था कि हमें इनका पूरा भाषण सुनने को क्यों नहीं मिला।

बीच बीच में कुछ सांसदों ने अपनी क्षेत्रीय भाषा में भी विचार रखे यद्यपि उनका कहा समझ में नहीं आया।

संसद कार्यवाही देखने के लिए हमें आवंटित समय समाप्ति की ओर था, लगभग 5 मिनट शेष थे। भाजपा सांसद मीनाक्षी लेखी अपने विचार रख रही थी कि तभी एक ऐसी शख्सियत का आगमन हुआ जिसके दर्शन पूरा पॉलिटिकल साइंस डिपार्टमेंट करना चाहता था, यहाँ तक कि योगेश सर ने हम से कहा भी था कि तुम्हें उन्हें सुनने का मौका मिल सकता है। अब ज्यादा सस्पेंस ना बनाते हुए सीधे बताता हूँ कि वो और कोई नहीं प्रधानमंत्री नरेंद्र दामोदर दास मोदी जी थे।

जैसे ही प्रधानमंत्री जी का आगमन हुआ, माननीया सांसद महोदया ने अपना वक्तव्य रोक दिया। सत्तापक्ष अपनी सीटों से खड़ा हो गया, सांसद मोदी. मोदी के नारे लगाने लगे। रोमांच अपने चरम पर पहुँच गया और वजीर.ए आजम के जलवा फरोज होने पर ये स्वाभाविक भी था।

इस घटना क्रम के बाद मेरे मस्तिष्क में पहला प्रश्न यही था कि प्रधानमंत्रीजी की रैलियों में मोदी-मोदी होना सामान्य सी बात है पर क्या संसद में सदा यही होता है। मुझे स्पष्ट याद है कि उस ध्वनि में इतना सम्मोहन और उत्साह था कि धड़कनें बढ़ गयी थी एवं साथ ही मोदी-मोदी चिल्लाने का दिल कर रहा है पर साफ इंस्ट्रक्शन थे कि कुछ ना बोला जाए इसलिए चुप थे पर ये चुप्पी ज्यादा देर नहीं रही क्योंकि बाहर निकलकर हम मेट्रोस्टेशन पहुँचने तक मोदी-मोदी ही चिल्लाते रहे और मेरे जीवन में ऐसा पहली बार हुआ था कि मैंने किसी नेता के लिए नारे लगाए हों।

प्रधानमंत्रीजी को देखने का सौभाग्य हमें अवश्य प्राप्त हुआ पर एक बात का बुरा भी लगा कि हम उनका भाषण नहीं सुन पाए क्योंकि उनके आने के 5 मिनट के अंदर ही हमारे स्लॉट का टाईम खत्म हो गया और हमें बाहर जाना पड़ा।

संक्षेप में कहूँ तो संसद का यह दर्शन अविस्मरणीय था पर इसमें सदस्यों की कमी बहुत खली, उम्मीद है जब अगली बार जाएँ तो ये ना हो।

नीतिशास्त्रपरम्परायां शुक्रनीतिमहत्त्वम्

सतरुद्रः प्रकाशः
संस्कृत-द्वितीयभागः

संस्कृतसाहित्यपरम्परायां नीतिशास्त्रस्य स्थानं महत्त्वं च राज्ञां मुकुटमणिरिव स्थितम्। अस्य प्रधानविषयः राजनीतिविमर्शः अस्ति। प्रायः विद्वांसः अस्य शास्त्रस्य समाहारं धर्मशास्त्रे कुर्वन्ति। संस्कृतसाहित्ये राजनीतिविषयकत्रिशास्त्राणि सन्तिः धर्मशास्त्रमर्थशास्त्रं नीतिशास्त्रं च। धर्मशास्त्रार्थशास्त्रयोः स्मृतिकाराः धर्मशास्त्रस्य प्राधान्यं स्वीकुर्वन्ति। तत्र नीतिशास्त्रस्य स्वतंत्रोल्लेखं न प्राप्यते। कालान्तरे एतस्य शास्त्रस्य गणना धर्मशास्त्रान्तर्गते विद्वद्भिः स्वीकृता। परन्तु नीतिशास्त्रस्य स्वतंत्रमस्तित्त्वं अस्ति। स्मृतिग्रन्थेषु अपि च स्मृत्याधारितान्येषु ग्रन्थेषु राजनीतिविमर्शः गौणरूपेण उल्लिखितः। तेषां प्रधानविषयः राजनीतिः नास्ति। मनुस्मृत्यां राजधर्मवर्णनं सप्तमेऽध्याये स्थितं तथा याज्ञवल्क्यस्मृत्यां राजधर्मप्रकरणः आचाराध्यायस्य द्वादशे प्रकरणे स्थितम्। नारदस्मृतिः चतुर्विंशतिप्रकरणेषु विभक्ता, राजधर्मस्य वर्णनं नवमे स्थाने प्राप्यते। सारांशरूपेण कथयितुं शक्यते यत् स्मृति-सूत्रग्रन्थेषु राजधर्मः राजनीतिविमर्शश्च न स्तः प्रधानविषयौ। एतेषु ग्रन्थेषु जनेभ्यः सामाजिकदर्शनं अपि च तेषां कृते यज्ञ-प्रायश्चित्त-पापपुण्य-वर्णाश्रम-पुरुषार्थादिविमर्शः प्रधानरूपेण वर्णितः। अत्र राजनीतिः अङ्गभूता अस्ति।

शुक्रनीत्याः सर्वेषु अध्यायेषु राजधर्मः प्रधानविषयः अस्ति। अत्र जनानां व्यक्तिगतजीवनस्य विमर्शः गौणरूपेण प्राप्यते। कामन्दकनीत्यां मङ्गलाचरणे राजनीतिविशारदस्य विष्णुगुप्तस्य वन्दना कामन्दकेन कृता। शुक्रनीतिः, विदुरनीतिः, कामन्दकनीतिः, नीतिप्रकाशिका इत्यादि नीतिग्रन्थाः अस्य शास्त्रस्य प्रतिनिधिग्रन्थाः सन्ति।

शुक्रनीतिः अस्याः परम्परायाः ग्रन्थरत्नम् अस्ति। पञ्चाध्याययुक्तेऽस्मिन्ग्रन्थे शासनतंत्रस्य सर्वे विषयाः वर्णिताः सन्ति। प्रथमेऽध्याये नीतिशास्त्रस्य गरिमप्रयोजनं च महत्त्वं च वर्णितम्। अपि च राज्ञः कर्त्तव्यं राजप्रासादनिर्माणप्रक्रियायाः च विस्तृतं वर्णनं प्राप्यते। द्वितीयेऽध्याये शासनतंत्रस्यावयवानां लक्षणं पदाधिकारिगणानां लक्षणं दायित्त्वं च वर्णितम्। तृतीये अध्याये सामान्यनागरिकाणां कृते आचारसंहिता तथा सामाजिकव्यवस्थायाः वर्णनम् अस्ति। चतुर्थाध्यायस्य सप्तोपभेदाः सन्ति। प्राचीनभारतीयमतानुसारेण राज्यं सप्तावयवानां समूहो वर्त्तते। अतः अस्मिन् अध्याये सप्तराज्याङ्गानां वर्णनं प्राप्यते। पञ्चमाध्याये खिलनीतिवर्णनम् अस्ति। शुक्रनीत्यां सर्वधर्मसमभावस्य च राष्ट्रोन्नत्याः भ्रष्टाचारोन्मूलनस्य च यान्योपचाराणि वर्णितानि, तानि अतुलनीयानि सन्ति। अपि च मानवीयमूल्यानां सुमनोहरं निदर्शनं अत्र भवति।

(सार : - संस्कृत साहित्य में नीतिशास्त्र एक महत्त्वपूर्ण शास्त्र है। हालांकि इसे स्वतंत्र शास्त्र के रूप में नहीं, बल्कि धर्मशास्त्र के अन्तर्गत ही परिगणित किया जाता था, लेकिन इस शास्त्र की अपनी एक समृद्ध परम्परा है। धर्मशास्त्रों में राजनीतिविषयक विमर्श प्रमुख विषय नहीं है जबकि नीतिशास्त्र विशुद्ध रूप से राजनीतिशास्त्र, शासन-प्रशासन, राजनैतिक दर्शन इत्यादि पर केन्द्रित है। शुक्रनीति इस परम्परा का प्रमुख एवं अद्भुत ग्रन्थ है। यदि इसे 'राजतंत्र का संविधान' कहा जाए तो अतिशयोक्ति न होगी। पाँच अध्यायों वाले इस ग्रन्थ का राजनीतिक दर्शन, मानव-कल्याण की सोच, सर्वधर्मसमभाव तथा सहअस्तित्त्व इतना उच्च है कि वो आधुनिक लोकतंत्र में भी प्रासंगिक है। कार्यपालिका में पारदर्शिता और जवाबदेही सुनिश्चित करने के उपाय, प्रजा के प्रति शासक का कर्तव्य, राज्य के हर नागरिक के मूल अधिकारों के रक्षण का उपाय तथा कर्तव्य के प्रति प्रेरित करने के लिए उपचार जैसे अनेक ऐसे विषय हैं जो भारतीय लोकतंत्र व समाज को आज भी दिशा देने की योग्यता रखते हैं।)

Feathers of colours

Shrutika Jaiswal
B.A. (H) English, III Yr.

Feathers of colours painting bright
It's an escape of the sight
Devouring blue into pink,
Merging purple into red
In a canvas of crisp white.
Vibrant pigments reflecting touristy light.

I caught it coming,
the nudges oh so running, the sensations all over.
Held me in Aww, the imprints of paws.

So were the waves, weaving threads in blue
Escorting back the Aesthetics,
Dangerousyet fascinating
Questionable yet receiving.

History scraping down, As were the claws.
Kept gaping, I discovered you
Amidst the transparency, You were different

It's an art;
Feathers of colours were painting bright,
It was an escape of the sight.

The longing of my heart

Bharti Raina
B.A. (H) English, III Yr.

I never knew that autumn blossoms to winter,
the Sun looks so mellowed and sad.
From my window I listen to the mournful choir of the hedge Crickets and grasshoppers .
Hey can you be with me to herald the changes?

For the meadows have a pellucid sense of longingness,
And the birds are loitering in distress,
I can see my garden at a distance,
Where yields of flowers are awaiting their mistress.
Hey! Did you hear my address,
Be with me to witness These changes.

For I sit beside my fireplace,
That denied me any comfort or warmth,
I never knew that food would defy me too,
For everything is too distorted without you,
Oh my my! If not my plea,
Listen to your heart, that also seeks me!

मोबाइल और मानसिक दशा

प्रियांक त्यागी
कला स्नातक, कार्यक्रम, प्रथम वर्ष

वैसे मोबाइल जीवन की तीन मूलभूत आवश्यकताओं (रोटी, कपड़ा और मकान) मे शामिल नहीं है। लेकिन जिस तरह से मानव और मोबाइल के बीच नजदीकियाँ (भोजन के दौरान भी मोबाइल प्राथमिक होता जा रहा है) बड़ रही हैं, उस पर विचार करना जरूरी है कि इस छोटी-सी युक्ति ने मानव को किस प्रकार

प्रभावित किया? और कैसे मानव के मस्तिष्क को अपने नियंत्रण मे लेता जा रहा है? अर्थात् रचना स्वयं रचयिता पर क्यों और कैसे हावी हो रही है?

अगर मोबाइल के उद्भव पर विचार करें तो पता चलता है कि मोबाइल एक ऐसी क्रांति के रूप मे आया था जिसने मानव के हित मे और उसके जीवन मे सकारात्मक परिवर्तन किए थे। हालांकि मोबाइल की उपयोगिता आज भी प्रासंगिक है। लेकिन साथ ही कई नई समस्याएं भी पैदा की हैं। मोबाइल के द्वारा डिजिटलीकरण, कंप्यूटर-शिक्षा को बढ़ावा मिल रहा है और सूचनाओं का आदान-प्रदान पारदर्शी, सुगम, तीव्र व सस्ता हुआ है जिससे देश के विकास को भी गति मिली है। लेकिन कहा जाता है कि एक सिक्के के दो पहलू होते है, जहां गुण है वहां दोष भी होगा ही। ये बात मोबाइल के मामले मे पूरी तरह से सार्थक सिद्ध हो रही है।

दिन की शुरुआत जहां पहले अखबार से होती थी वहीं अब दिन की शुरुआत fb, twitter, wats app से होती है और अन्त भी इन्ही से। मोबाइल ने हमारे मन को इस प्रकार जकड़ा हुआ है कि एक मिनट के लिए भी खाली होने पर व्यक्ति सीधे मोबाइल की शरण मे जाता है। अर्थात् अब मोबाइल के बिना जीवन नीरस होता प्रतीत हो रहा है।

मोबाइल पर चलने वाली विभिन्न वेबसाइट, ऐप ने तरह-तरह की अप्रमाणिक सामग्री की बहुलता कर दी है। ये गलत सामग्री हमारा समय नष्ट करने के साथ ही हमें मानसिक रूप से पंगु बना रही है। ऐसे लोग भी पूरी दुनियाँ मे बड़ी संख्या मे हैं जो 5-6 घंटे या उससे भी कहीं अधिक समय मोबाइल पर बिताते हैं। इसमे मुख्य रूप से वर्तमान युवा पीढ़ी शामिल है जो राष्ट्र व मानवजाति का भविष्य है। मोबाइल का अति से ज्यादा इस्तेमाल हमे मानसिक व शारीरिक रूप से कमजोर बना रहा है साथ ही समाज मे व्यभिचार, रंगभेद जैसी बुराइयों को सींच रहा है।

दुनियां के कई अग्रणी देश मोबाइल से पैदा होने वाली समस्याओं को खत्म करने के लिए चिकित्सा केन्द्रों की स्थापना कर रहे हैं। ये केंद्र लोगों को आत्मसंयम के गुर सिखाकर बहुत हद तक सफल भी हो रहे हैं।

याद रहे कि जिस प्रकार एक महंगा मोबाइल अच्छे ऐप के बिना डिब्बा है उसी प्रकार हमारी यह सुंदर काया भी मानसिक स्वास्थ्य के बिना बेकार है। अतः जीवन की खुशहाली के लिए हमें मानसिक और शारीरिक रूप से स्वस्थ बनना होगा और इसके लिए मोबाइल को हमें अपने नियंत्रण मे रखना होगा, मोबाइल के नियंत्रण मे हमे नहीं आना।

'Inside the Kingdom'

Shaheen
B.A. (H) English, III Yr.

Robert Lacey's 'Inside the Kingdom', the avant-garde of the modern hermeneutical genre.Autobiographically written over had her repercussion brawling upon oil-rich regime. Giving a read to this book inevitably integral. Carbon dating the default history of Saudi Arabia envisages the strong bond between the clerics and Royal Family.

Over the historical periphery to pinpoint the initial Wahhabi as Ibn Abdil Wahhab couldn't stand a good chance in front of Wahhab bin Rustam, an obsolete Morrocan fighter.Unfortunate to contemplate Juhayman been a scapegoat to royal creed and clerics becomes inexorably crucial.

Kingdom saw Istikhbarat, intelligence agency's full-fledged growth followed by the seizing of Ka'aba. Ibn Baz, a blind reverend scholar with Islamic scholarship enterprise, critically flayed for his fatwa; ontologically fatwa ain't a part and parcel of the unquestionable religious verdict but a comprehension.

The ongoing Shia-Sunni duel, proxy wars and geopolitics proliferated during the post-Shah regime. there seen some accounts of King Khalid detrimental of the Islamic revolution in Iran, Shia version.

Apparently compelling us that the Author deconstructs the very notion that Saudi lacks intimacy in parallel with the fledgeling Al Qaeda during pre-Soviet disintegration. "Nevertheless, the repentance of a hypocrite is itself hypocrisy, erases the past." Insists some liberals of occidental contour.

considering with reference to Jamal Khashoggi in the book, MBS might not be ordered to trample such a 'law-abiding, philanthropic man while the former's dire attempt to reconcile Bin Laden to make way back home.

Reading from MBS 's time, the book of startling insights pave a whirling wind of change in the Kingdom from detention for women drivers to legalizing women drivers.

The redolent of enigmatic bamboozlement Saudi Arabia arouses in the West. It mattered Islamophobia for its hectic ballooning upon the Muslim diaspora.

"I had forgotten that a full-blood prince had been into space. In 1982, Prince Sultan bin Salman al-Saud, a nephew of the King of Saudi Arabia, was a payload engineer on the space shuttle Discovery". Accounts Robert Spencer.

Inside the Kingdom is an insider's view, profoundly foreigner, with little access of geopolitical machinations. Generalizing the stereotype of the orient is reiterated upon the discourses of 'barbaric nomads'. Lacey was doing his job as a white man's burden-epitomize the colonizer in the post-colonial genre.

My entire 10 years in that 'barbaric nation' stood a good chance that Lacey ought to be erring. God knows best.

God gracious to thank Robert Lacey and Saudi Arabia.

पीड़ा

आस्था प्रियदर्शिनी
कला स्नातक, हिन्दी विशेष, तृतीय वर्ष

वो रो रही थी
सुबक-सुबक कर
पर,
आज उसके रोने पर माँ रोई नही
हाँ बस व्यस्तता बढ़ गयी थी उनकी
खोल लिए थे कपड़ों से भरे पुराने बक्से
गूँथ रही थी अपनी यादों को
हवा दे रही थी अपने ख्वाबों को

तेरह बरस की मुन्नी भी
सीख गई थी कपड़ों को चार तह करना
सीख गई थी पीड़ा झेलना पर कुछ ना बोलना
पर क्या सब के साथ ऐसे ही....?

उबलते, सुलगते, बहते लहू ने
कभी टिके रह कर कुछ रचा नहीं
तेरह बरस की यादों में जुड़ गए
और तेरह बरस
मुन्नी अब भी पीड़ा में है
पर दोष किसका है
तेरह बरस का, माँ का
या फ़िर चार तह किये कपड़े का?

अल्लामा इक़बाल ----------

माना कि तेरी दीद के क़ाबिल नहीं हूँ मैं
तू मेरा शौक़ देख मिरा इंतिज़ार देख

एडवांस होने लगा हूँ

मुन्ना कुमार यादव
विज्ञान स्नातक (विशेष), गणित, प्रथम वर्ष

मां बाप के चरण स्पर्श को छोड़कर
अब गुड मॉर्निंग बोलने लगा हूँ
घर में बोलचाल बंद कर
अब फेसबुक पर चैटिंग करने लगा हूँ
मैं तो अब एडवांस होने लगा हूँ ।।
पत्र लिखना बंद कर
अब मोबाइल से हालचाल पूछने लगा हूँ
समाचार पत्र में समाचार पढ़ना छोड़ कर
अब पीडीएफ में पढ़ने लगा हूँ
मैं तो अब एडवांस होने लगा हूँ ।।
दोस्तों के साथ ना खेलकर
अब वीडियो गेम खेलने लगा हूँ
बाजार न जाकर
अब ऑनलाइन शॉपिंग करने लगा हूँ
मैं तो एडवांस होने लगा हूँ ।।
बड़ों से सीखना छोड़कर
अब यूट्यूब पर सीखने लगा हूँ
पान वाले से रास्ता ना पूछ कर
गूगल मैप करने लगा हूँ
मैं तो अब एडवांस होने लगा हूँ ।।
खाली समय में अपनों से बात न कर
अब टीवी देखने लगा हूँ
जिंदगी के स्टेटस को ना बदल कर
अब व्हाट्सएप स्टेटस बदलने लगा हूँ
मैं तो अब एडवांस होने लगा हूँ ।।
ढाबा से खाना मंगाना छोड़कर

जोमैटो से खाना बनाने लगा हूँ
हाथों से खाना खाना छोड़ कर
अब चम्मच से खाने लगा हूँ
मैं तो अब एडवांस होने लगा हूँ ।।

बेटी

बेटा हो तो सबसे सुंदर
बेटी हो तो बीमारी हो जाती है
बेटा हो तो अपना है
बेटी हो तो पराई हो जाती है
बेटा एक वंश चलाता है
बेटी तो दो वंश चलाती है
बेटे-बेटे तो छोड़ देते हैं मां-बाप को
बेटियां तो
सात समुंदर पार से भी आ जाती हैं
बेटो जैसा पढ़ाओ, बेटो जैसा सम्मान करो।
बेटियां भी नाम रोशन करेंगी
एक बार तो विश्वास करो ।
मत मारो बेटियों को गर्भ में ,
उन्हें भी जीने का अधिकार दो ।

प्रतिपक्ष में होना आज लेखक की नियति है

(केदारनाथ सिंह से शशि कुमार 'शशिकांत' की बातचीत)

दिल्ली में रहते हुए भी हिंदी के वरिष्ठ कवि केदारनाथ सिंह का रचनाकार मन बार-बार गाँव की ओर लौटता रहता है। केदार जी की कविता 'नूर मियाँ' का काव्य नायक नूर मियाँ उनके पाठकों के मन में रच-बस चुका है। अक्सर उनकी कविता के पाठक नूर मियाँ को लेकर उनसे सवाल करते हैं। इस संबंध में उन्होंने एक रोचक संस्मरण सुनाया, "पिछले दिनों पटना पुस्तक मेले में हिंदी के एक पाठक ने मुझसे पूछा, "केदार जी, 'नूर मियाँ' कविता लिखे इतने दिन गुजर गए। बताइए कि पाकिस्तान जाने के बाद नूर मियाँ का क्या हुआ? वे अब कैसे हैं?" इससे जाहिर होता है कि किसी रचना का एक पात्र किस तरह पाठक के मन में बैठ जाता है और रचनाकार एवं पाठक के बीच एक आत्मीय रिश्ता बनाता है।

'नूर मियाँ' कविता से बात शुरू होकर विभाजन की त्रासदी और हिंदू मुस्लिम संबंधों से गुजरते हुए गुजरात के दंगे तक आ जाती है। अभी हाल में के. विक्रम सिंह के साथ अपने ऊपर बन रही फिल्म के सिलसिले में गाँव से लौटे केदार जी कहते हैं, "इस बार गाँव जाना और बार जाने से थोड़ा भिन्न था, क्योंकि उसमें औपचारिकता शामिल थी। पर, एक बार उस औपचारिक बंधन से मुक्त होने के बाद मैंने गाँव में कुछ दिन रुकने का फैसला किया और लोगों से मिलता-जुलता रहा। गाँव की सबसे बड़ी खूबी मुझे यही लगती है कि वहाँ आज भी औपचारिकता नहीं है, और यही बात मुझे बार-बार आकृष्ट करती है। जहाँ तक गुजरात कांड पर गाँव की प्रतिक्रिया का सवाल है तो उसकी थोड़ी-बहुत जानकारी मैं हासिल कर सका, ज़्यादातर छोटे तबके के लोगों से। मैंने पाया कि गुजरात में पिछले दिनों जो कुछ हुआ और जो आज भी हो रहा है, गाँव के लोग उसके विरुद्ध हैं। जो ताकतें इस आग को हवा दे रही हैं, उनके खिलाफ गाँवों में एक व्यापक

माहौल बनता जा रहा है। गाँव के बृहत्तर जनमानस के भीतर यह मुझे एक सुखद और सकारात्मक बदलाव दिखलाई पड़ा जिसके राजनीतिक फलितार्थ शायद भविष्य के चुनाव में सामने आए।''

अगला सवाल मैं उनसे पूछता हूँ कि ''आज के सांप्रदायिक माहौल में नूर मियाँ की तरह किसी अन्य आत्मीय मुस्लिम पात्र को लेकर कोई कविता आपने लिखी है या आगे लिखने की योजना है क्या?''

जवाब में वे कहते हैं, ''देखो, नूर मियाँ एक ऐसे पात्र थे जो सचमुच थे यानी मैंने उन्हें गढ़ा नहीं। ऐसे अनेक पात्र मेरी रचनाओं में आते हैं, जिन्हें मेरे गाँव के लोग पहचानते हैं। ऐसे दूसरे पात्र भी मिल सकते हैं। अभी हाल में मैंने एक कविता लिखी है ''इब्राहिम मियाँ का हालचाल''। यह गुजरात कांड के बाद लिखी गई कविता है और इसमें जिस इब्राहिम मियाँ का ज़िक्र आता है, वे अभी भी हैं हालाँकि अति वृद्ध हो गए हैं। एक अच्छी बात है कि इधर के लेखन में सिर्फ मेरे यहाँ ही नहीं बल्कि अनेक दूसरे लेखकों के यहाँ भी मुस्लिम पात्र फिर से रचना में आने लगे हैं। इससे लेखकों की उस गहरी बेचैनी का पता चलता है, जो समाज के बिखरते हुए धागे को समेटना-सहेजना चाहते हैं। मेरे गाँव में आज तक कोई दंगा नहीं हुआ, हालाँकि वहाँ मुस्लिम परिवार काफी हैं। गाँवों में दंगे नहीं होते, छिटपुट अपवादों को छोड़कर। गाँवों की इस खूबी पर भी ध्यान दिया जाना चाहिए, जिस पर चर्चा कम हुई है।''

बातचीत को आगे बढ़ाते हुए मैं गाँव की संस्कृति के सवाल को आज़ादी के बाद केंद्रीकृत विकास नीति और आधुनिक नगरीय संस्कृति तक खींचकर ले जाता हूँ। इस पर गंभीरतापूर्वक वे कहते हैं, ''देखो जहाँ तक आधुनिकता के विकास का सवाल है, मेरा मानना है कि वह भारतीय संदर्भ में आधा-अधूरा ही हुआ है। गाँवों को छोड़ दें तो शहरी मध्यवर्ग भी आधुनिक-बोध के धरातल पर कितना विकसित हुआ है, इसकी जाँच-पड़ताल की जानी चाहिए। सच्चाई यह है कि आधुनिकता की अवधारणा में ही बुनियादी खामी है, जिसका उत्स कहीं शहरों मे रहा है और गाँव*(अचानक बिस्तर पर रखे फोन की घंटी बजती है। खादी का हाफ कुर्ता और ढीला पाजामा पहनकर कुर्सी पर बैठकर बातचीत कर रहे केदार जी फोन रिसीव करते हैं- हैलो....नमस्कार बंधु, क्या हाल हैं? कहाँ से?...घर से ही?...आई.आई.सी. आना है?...चार बजे?..अच्छा नामवर जी भी आ रहे हैं?...आ जाऊँगा। गाड़ी मिल जाएगी।...एकाध बच्चे को मीडिया में लगाइए...। अच्छा आऊँगा तब बात होगी....।'' फोन रखकर अधूरी बात करते हैं)* लगातार उस दायरे से छूटता गया है। इसका नतीज़ा यह हुआ कि गाँव और शहर के बीच का फासला बढ़ा है और उसको जोड़ने वाली सड़कें भी ज़्यादातर जर्जर ही हुई हैं।

अब जब गाँवों का ये हाल है तो आदिवासी समाज इस आधुनिकता से कितना जुड़ा है, या नहीं जुड़ा है, यह अलग से गौरतलब है। कुछ लोगों का मानना है और शायद ठीक ही मानना है कि तथाकथित आधुनिक विकास ने आदिवासी समाज को देने के बजाय छिन्न-भिन्न ज़्यादा किया है।''

(अपनी बात कहकर वे उठते हैं और पानी की बोतल उठाकर कमरे से बाहर निकलते हैं। दो मिनट बाद गोद में दो साल की पोती पीहू और हाथ में पानी भरी बोतल लेकर कमरे में दाखिल होते हैं। पानी की बोतल मुझे पकड़ाकर वे पोती के साथ खेलने लगते हैं। बाबा और पीहू की तुतलाहट भरी प्यारी बातचीत बौद्धिकता के बोझिल वातावरण को राहत पहुँचाती है।

''बाबा, अंकलऽऽऽ'' पीहू मेरी तरफ देखकर ऊँगली से इशारा करती हैं।

केदार जी बोलते हैं, ''हाँ अकंल पेपर के लिए मेरा इंटरव्यू कर रहें हैं।''

''पेपलऽऽऽ'' पीहू बोलती है।

तब तक दरवाजा खोलकर उनका पाँच वर्षीय पोता आमिष भी आ जाता है और पीहू के साथ खेलने लगता है।

''चलो, अब तुम लोग बाहर जाओ। काम करने दो'', केदार जी उनसे कहते हैं)

पीहू और आमिष के बाहर जाने के बाद मैं केदार जी से पूछता हूँ कि दिल्ली में रहते हुए गाँव जाने पर आप जैसे एक कवि हृदय व्यक्ति को कैसा महसूस होता है?''

''मेरी एक कविता की दो पंक्तियाँ मेरे अंदर के दंश से पैदा हुई हैं। गाँव जाकर मैं अपने को एक फालतू चीज की तरह पाता हूँ। वहाँ बहुत कुछ है, जिससे जुड़ नहीं पाता या जो परेशान भी करती हैं, पर फिर भी वह क्यों आकृष्ट करता है? शायद इसी की तलाश के लिए मैं बार-बार गाँव जाता हूँ। अब गाँव मंे पुराने चेहरे कम दिखाई पड़ते हैं। उनके साथ 'डायलाॅग' नहीं हो पाता। पुराने लोगों के साथ 'डाॅयलाग' करने में तीस-चालीस साल पीछे जाना पड़ता है, क्योंकि गाँव में समय इसी तरह से चलता है। सबसे बड़ी चिंता का विषय गाँव को लेकर जो पैदा हुआ है, वह है बढ़ता हुआ अपराधीकरण। यह शायद ज़्यादातर गाँवों की समस्या है। मेरा अपना गाँव इससे बचा हुआ था, लेकिन धीरे-धीरे वह भी इसकी चपेट में आता जा रहा है। यह बेरोजगारी की देन है लेकिन सिर्फ बेरोजगारी की नहीं इसका एक पहलू व्यापक रूप से हमारे सांस्कृतिक बिखराव या क्षरण से भी जुड़ता हैं,'' केदार जी ने बताया।

सन 1976 ईस्वी में केदार जी दिल्ली आ गए थे। मैंने उनसे पूछा कि ''जब आपने दिल्ली में बसने का फैसला किया तो यहाँ ऐसा क्या था जिसने आपको आकर्षित किया, बाँधा और ऐसा क्या है जो बार-बार आपको अपने गाँव ले जाता है?''

वे बोले, ''उस क्या की व्याख्या करना तो कठिन है। मुझे यहाँ मीर का एक शेर याद आता हैः

'दिलो दिल्ली गरचे हैं दोनों ख़राब,
पै कुछ बात इस उजड़े घर में भी है।'

तो, दिल्ली है तो मेरे जैसे लोगों के लिए आज भी उजड़ा हुआ घर ही पर, कुछ है जो सिर्फ यहीं है। जैसे एक बोलता-बतियाता हुआ बड़ा लेखक समाज, कुछ महत्त्वपूर्ण सहित्यिक-सांस्कृतिक संस्थाएँ और मीडिया का विशाल विस्तार। ये सबकुछ हम चाहें या न चाहें हमारे आज के जीवन का अपरिहार्य हिस्सा बन गया है। पर इन बातों के साथ-साथ दिल्ली, जो कि असल में मेरा प्रदेश है, मुझे अपने छूटे हुए 'देस' को जानने-समझने के लिए एक आवश्यक दूरी भी देता है, लगभग उसी तरह जैसे एक पक्षी दूर से अपने घोंसले को देखता है।''

केदार जी के साथ मेरी बातचीत उनके कर्मस्थल दिल्ली में दाखिल हो चुकी है। मैं उनसे जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के अकादमिक माहौल में अपनी रचनात्मकता बचाए रखने की सफलता जैसा विवादास्पद सवाल पूछता हूँ, जिसका जवाब वे बड़ी सहजता से देते हैं, ''मैं ऐसा नहीं मानता कि 'एकेडमिक वर्ल्ड' अनिवार्यतः सृजन विरोधी होता है। बहुत कुछ व्यक्ति की क्षमता पर निर्भर करता है कि वो उस माहौल को किस तरह अपने अनुरूप बना पाता है या फिर नहीं बना पाता है।

जे.एन.यू. का माहौल वैसे भी आम शैक्षिणक माहौल से अलग रहा है। एक विलक्षण वैचारिक उत्तेजना का माहौल लंबे समय तक वहाँ का अनिवार्य हिस्सा रहा है, और इस बात को मैं एक सृजनात्मक बेचैनी के रूप में देखता हूँ। दरअसल जे.एन.यू. जो कक्षाओं में होता है, उससे कहीं ज़्यादा सड़कों, गोष्ठियों, कैफेटेरिया आदि मंे और ऐसे अन्य अनौपचारिक स्थलों पर होता है। मुझे जे.एन.यू. का ये हिस्सा ज़्यादा सर्जनात्मक लगता है और मैं चुपचाप उससे आवश्यक उपजीव्य ग्रहण करता रहा हूँ। कितना कर सका हूँ, ये नहीं एक कह सकता।''

इसके बाद मैं उनसे कविता से जुड़ा एक ठोस सवाल पूछता हूँ कि उनकी कविताओं में एक खास तरह की कोमलता रहती है, इतनी कोमलता कि वे किसी चीज़ का मुखर विरोध नहीं कर पाते।

जवाब में वे कहते हैं, ''बात ये है कि मैंने गीत से शुरुआत की थी। जिसे तुम कोमलता कह रहे हो, शायद वहाँ से लगी-लिपटी चली आई हो।*(बातचीत बीच में रोककर वे मुझसे पानी पीने पूछते हैं और बोलते हैं 'मुझे प्यास ज़्यादा लग रही है।' मई की चिलमिलाती दुपहरी की तपिश उनके कमरे को भी नहीं बख़्श रही।....कमरे की खिड़कियों के बाहर दक्षिण दिल्ली के पाॅश इलाके साकेत के एस.एफ.एस. फ्लैट्स पर चमकती तेज धूप और गर्मी से प्रतिरोध करते पेड़ों पर से मोर की आवाज़ गूँजती है।...)* पर मैं उसे ठीक-ठीक कोमलता नाम से पुकारना नहीं चाहूँगा। यह

संवेदना की अलग किस्म की बनावट हो सकती है। जहाँ तक मुखर विरोध का सवाल है तो मेरी प्रकृति उससे कुछ भिन्न रही है। प्रतिपक्ष में होना आज लेखक की नियति है ऐसा मैं मानता हूँ, पर विरोध या प्रतिरोध के हज़ारों ढंग हो सकते हैं। कला उन्हीं अलग-अलग ढंगों की तलाश करती है और यह काम वह अक्सर परोक्ष ढंग से करती है, क्योंकि उसकी प्रकृति ही कुछ इस तरह की होती है। कोई चाहे तो इसे मेरी सीमा कह सकता है, पर मैं कला में मुखरता का कायल नहीं हूँ।''

नई दिल्ली के जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के भारतीय भाषा केंद्र से सेवानिवृत्त होने के बाद अपनी उम्र के सातवें दशक को पूरा करता हुआ यह रचनाकार अपनी शारीरिक और मानसिक चुस्ती-तंदुरूस्ती के साथ हिंदी की दुनिया में जिस तरह सक्रिय है, उसे देखकर हमारे आज के बहुतेरे युवा लेखकों को भी ईष्र्या हो सकती है। अपनी इस तदुरूस्ती का राज बतलाते हुए वे कहते हैं, ''मैं रोज सुबह छह बजे उठ जाता हूँ और घूमने जाता हूँ। अगर बच्चों का स्कूल खुला है तो उन्हें बस तक पहुँचाता भी हूँ। इस तरह मेरा दिन शुरू होता है। इसके बाद अखबार, जो प्रायः पहली चाय के साथ पढ़ा जाता है फिर बाथरूम जिसमें लगभग पैंतालिस मिनट लग जाते हैं। इसके बाद एक्सरसाइज करता हूँ। इससे दिनभर की स्फूर्ति बनाए रखने में मदद मिलती है।''

अपनी तंदरूस्ती के राज को खोलते हुए वे खाने-पीने के शौक और अपनी दिनचर्या का भी बखान करते हैं, ''मेरे खाने के शौक बहुत सीमित हैं। सुबह में हल्का नाश्ता लेता हूँ, जिसमें दही जरूर होता है। मुझे बिहार का चूड़ा-दही बहुत पसंद है। नाश्ते के रूप में उसे पसंद करता हूँ, हालाँकि अल्प मात्रा में ही। इसके बाद थोड़ा-सा पढ़ना-लिखना, लगभग बारह-साढ़े बारह तक और वह भी तब जब कहीं बाहर जाना नहीं हुआ।''

इसके बाद केदार जी दिल्ली के महानगरीय समाज की संभावनाओं, सीमाओं और अकेलेपन पर टिप्पणी करने लगते हैं, ''दिल्ली की एक ख़ासियत है कि यहाँ घर से निकलने के अनेक बहाने हमेशा रहते हैं। उनमें चुनाव करना पड़ता है इसलिए कुछ में जाता हूँ और कुछ छोड़ देता हूँ। समय मिला तो शाम को भी थोड़ा टहलना पसंद करता हूँ। उसके बाद फिर अपने कमरे में दिन का छूटा हुआ कागज फिर से संभालता हूँ और इस तरह यह सिलसिला चलता रहता है। शाम को अकेलापन सबसे घना और गहरा होता है- ऐसा मुझे लगता है। शायद लंबे समय तक छोटे शहरों में रहने के कारण ये स्थिति पैदा हुई है। दिल्ली में अकारण मिलने-जुलने का कोई रिवाज नहीं है। मेरे मन का एक कोना है जो इस स्थिति से पैदा होनेवाले खालीपन को गहराई से महसूस करता है और इस बढ़ी हुई उम्र में थोड़ा ज़्यादा ही है।''

अकेलापन अंतर्मन की एक भाव दशा है। हिंदी साहित्य में अज्ञेय और निर्मल वर्मा को यह एक रचनात्मक दिशा प्रदान करता है लेकिन केदारनाथ सिंह का अकेलापन भोगा हुआ अकेलापन है, जो आज से पच्चीस साल पहले पत्नी की कैंसर से मृत्यु के कारण उनके जीवन में आया है। रचनात्मक और व्यावसायिक लाचारी के कारण न पूछना चाहते हुए भी पत्नी की मृत्यु और उसके कारण जीवन में पैदा हुई परिस्थितियों का पीड़ाजनक सवाल मैं उनसे पूछता हूँ, जिसका जवाब देते हुए वे थोड़ा भावुक हो उठते हैं, "1977 में पत्नी शिवा *(बिस्तर के सिरहाने दीवार पर टँगी फूलों की माला चढ़ी फ्रेम की हुई पत्नी की तस्वीर देखते हुए)* की कैंसर से मौत हुई थी। उसकी मृत्यु के कारण पैदा हुआ अकेलापन अनिवार्य और अपरिहार्य है। विदेशी मानस इस अकेलेपन को ठीक-ठीक समझ नहीं सकता। पत्नी की मृत्यु के बाद मैंने इस अकेलेपन का वरण किया है। वह मेरा सोचा-समझा निर्णय था। ऐसा निर्णय लेते समय मरे सामने कई बड़े उदाहरण थे जैसे टैगोर, निराला आदि। उस समय यह समस्या जरूर थी कि मेरे बच्चे छोटे हैं और वे कैसे पलेंगे। कुछ प्रस्ताव ऐसे भी आए कि दूसरी शादी कर लें, पर कुल मिलाकर मेरे मन ने इस स्थिति को स्वीकार नहीं किया, क्योंकि कहीं न कहीं यह विश्वास था कि इस अकेलेपन में बच्चे ख़ुद-ब-ख़ुद पल-पुस जाएंगे। और ऐसा हुआ भी यह आज मुझे विस्मयजनक लगता है।
(थोड़ा-सा ठहरकर, अपनी स्मृतियों को कुरेदकर वे अतीत में जाते हैं और बोलते हैं)-

पत्नी मेरी कम पढ़ी-लिखी थीं, पर उनमें एक अद्भुत विवेक था और चीज़ों को समझने की गहरी दृष्टि भी। जिस तरह उन्होंने अपनी बीमारी को झेला उसका मैं साक्षी रहा हूँ, थोड़ा-बहुत भोक्ता भी। कहीं बार-बार मन में पीड़ा यह भी होती कि यदि बेहतर चिकित्सा सुविधाएँ उपलब्ध होतीं तो शायद उन्हें मैं बचा भी सकता था या कुछ समय के लिए और ज़िंदा रख सकता था। यह पीड़ा इस समय भी, जब मैं आपसे बातें कर रहा हूँ, मेरे मन में उतनी ही गहरी है।"

केदार जी के साथ मेरी यह अंतरंग एवं अनौपचारिक बातचीत ने इस मुकाम पर पहुंचकर माहौल को भारी कर दिया था। मैं इसे हल्का-फुल्का बनाने के लिए उन्हें थोड़ी देर की राहत देते हुए उनके बिस्तर के ऊपर बिखरी 'पूर्वग्रह', 'वागर्थ', 'माध्यम', 'तनाव' आदि साहित्यिक पत्रिकाआंे को उलटने-पलटने लगता हूँ।

थोड़ी देर बाद...
"सन 1999 ईस्वी में जे.एन.यू. से सेवानिवृत्ति के बाद केदार जी अपना समय कैसे बिताते हैं और आजकल क्या लिख-पढ़ रहे हैं", मेरे इस सवाल के उत्तर में वे कहते हैं, "ये अच्छा सवाल पूछा है तुमने, मौजूं भी। एक अवकाश प्राप्त व्यक्ति के पास अवकाश ही अवकाश होता है, पर मैंने इस निरअवधि अवकाश से दो-चार होने के कुछ रास्ते निकाले हैं। पिछले दिनों एक अखबार ;हिंदुस्तानद्ध में स्तंभ लिखता रहा जो इधर बंद हो गया है। साथ-साथ सृजन कर्म भी

चलता रहता है। पिछले कुछ समय से उर्दू घर से जुड़ा रहा हूँ और महत्त्वपूर्ण उर्दू लेखकों को हिंदी में लाने की योजना पर काम कर रहा हूँ। एक पत्रिका निकालने की भी योजना है जो आकार ले चुकी है। उसका पहला अंक शीघ्र ही आपके सामने आ जाएगा।''

अपने पढ़ने-लिखने की ही बात को आगे बढ़ाते हुए वे कहते हैं, ''इधर मैंने दो किताबें पढ़ी हैं एक ''क्लैसिकल चीनी कविताएँ'' और 'अंतरंग संस्मरणों में जयंशकर प्रसाद।' पहली किताब में तू-फू, ली पै और वां3गवाइ की कविताएँ हैं। ये तीनों मेरे प्रिय रचनाकार हैं। कभी मन में आता है कि इनका हिंदी अनुवाद करूँ। दूसरी किताब पुरुषोत्तम मोदी द्वारा संपादित है जो विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी से छपी है। इसमें जयशंकर प्रसाद के बारे में बिल्कुल कुछ नई सूचनाएँ हैं, जिनसे उनके व्यक्तित्व और उनकी रचना को समझने में मदद मिलती हैं।''

''आजकल आप क्या लिख रहे हैं?''
इस बारे में वे बतलाते हैं, ''इधर दो पुस्तकों पर काम कर रहा हूँ एक काव्य संकलन तैयार होने पर है और दूसरी गद्य की भी लगभग तैयार हो चुकी है।''

बातचीत को समेटने के अंदाज़ में फिल्म और साहित्य की पड़ोसी कलाओं के प्रति उनके लगाव के संबंध में जब उनसे पूछता हूँ तो वे बतलाते हैं, ''मैं प्रायः फिल्में कम देखता हूँ। हाँ पोते आमिष के साथ बैठकर टी.वी. पर क्रिकेट देखना पसंद है। अंतिम फिल्म बनारस के एक सिनेमा हाल में 'फायर' देखी थी, पर इधर कुछ छोटी-छोटी फिल्में देखी हैं। मित्र के. विक्रम सिंह द्वारा सत्यजित रे के जीवन तथा श्रीलंका के एक प्रसिद्ध फिल्म निर्देशक और गुजराती के कवि एवं मशहूर चित्रकार गुलाम मोहम्मद शेख पर बनी फिल्में काफी पसंद आईं। सत्यजित रे पर बनी फिल्म का अपना एक अलग वैशिष्ट्य है। गुजरात के संदर्भ में गुलाम मोहम्मद शेख के चित्रों पर आधारित फिल्म को देखना एक बिल्कुल नए ढंग का अनुभव था। उनके चित्रों में आग की लपट की तरह पीले रंग का बार-बार इस्तेमाल आज के गुजरात के पूर्वाभास की तरह लगा।''
लेकिन शास्त्रीय और लोक संगीत खासकर कबीर की रचनाओं का गायन केदार जी को खास पसंद है। इस बारे मंे वे कहते हैं, ''शास्त्रीय संगीत सुनना पसंद करता हूँ, खासकर भीमसेन जोशी की आवाज मुझे कहीं गहरे से प्रभावित करती है और विचलित भी करती है। कुमार गंधर्व को सुनना भी अच्छा लगता है, पर इधर कबीर गायन की परंपरा में जो नई ऊर्जा आई है, वह मुझे महत्त्वपूर्ण लगती है। ऐसे गायक जाने-माने नहीं,देश के किसी भी कोने में हो सकते हैं। ऐसे ही गायक समुदाय से कुछ महीने पहले मेरी भेंट उत्तर प्रदेश के एक अत्यंत पिछड़े इलाके में हुई थी। जिस तरह उन्होंने कबीर को प्रस्तुत किया, वह मेरे लिए अविस्मरणीय है।

कबीर असल में दो हैं एक वो जो किताबों में मिलते हैं और दूसरे वो जो किताबों के बाहर हैं। किताबों के बाहर वाला कबीर जनता का कबीर है और उसके प्रस्तुतीकरण के असंख्य तरीके को जनसमुदाय ने खोजा है। कभी-कभी मुझे लगता है कि कबीर गायन की पद्धतियों पर अलग से काम होना चाहिए। और इसी तरह लोक में बिखरे हुए कबीर का भी अनेक खंडों में संचयन और प्रकाशन किया जाना चाहिए। कोई इसे 'लोक कबीर' नाम दे सकता है। कबीर पंथ के मूल गादी के आचार्य गंगाशरण शास्त्री ने अभी पुराने बीजक को परिवर्तित करके एक महाबीजक का प्रकाशन किया है, जिसमें लोक प्रचलित पदों को भी बड़ी संख्या में शामिल किया गया है। पर मेरा ख़्याल है कि अभी भी बहुत कुछ है, जो असंकलित, मौखिक रूप में जनता के कंठ या स्मृति में पड़ा हुआ है।''

हिंदी दैनिक के लिए बातचीत ख़त्म कर काग़ज़-कलम समेटता हूं। थैला उठाते हुए उनसे विदा लेना चाहता हूँ।
''कहाँ जाओगे?'' तभी वे पूछते हैं।
'मैं कहता हूँ, ''दिल्ली विश्वविद्यालय।''
''मैं भी साहित्य अकादेमी चलता हूँ, दस मिनट रूको'', उन्होंने कहा।
मैं उनके कमरे से बाहर निकलकर उनके पोते आमिष के साथ हाल में थोड़ी देर क्रिकेट खेलता हूँ, बल्कि उसे बाल फेंककर खिलाता हूँ।

दस मिनट बाद केदार जी बाहर निकलते हैं। बाहर तेज धूप है। दोपहर के दो बजे हैं। आॅटो पर बातचीत करते हुए सफदरगंज मदरसा से आगे बढ़ते हुए वे बायीं ओर इशारा करते हुए बतलाते हैं, 'श्रीकांत वर्मा यहीं सफदरजंग में रहते थे। मैं उनसे मिलने आता था। हम दोनों एक-दूसरे को खत लिखते थे।....'' अतीत की स्मृतियों पर आधारित बातचीत और लू के थपेड़ों को सहते हुए आटो मंडी हाउस के साहित्य अकादेमी के गेट के सामने रूकता है। एक हाथ में लिफाफा और दूसरे हाथ में लाल जिल्द में लिपटी वी.एस. नायपाल की किताब ''इंडिया ए मिलियन म्यूटीनीज नाउ'' दिखलाते हुए वे कहते हैं, ''लाइब्रेरी में लौटाने आया हूँ...चार बजे आना था लेकिन सोचा तुम्हारे साथ ही आ जाऊँ।''

आटो से उतरकर वे साहित्य अकादेमी के अंदर चले गए।...और हाँ, बूढ़े आटोवाले को तय पचास रुपये की जगह उन्होंने पचपन रुपये दिए।

---- डॉ. शशि कुमार 'शशिकांत'
हिंदी विभाग

Gandhi Study circle

Gandhi Study circle

B.A. Programme 'Rachnayan'

Chemistry Subject Society

History Subject Society

Fine Arts Society

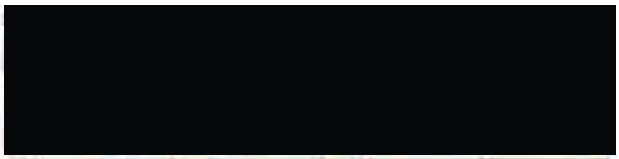

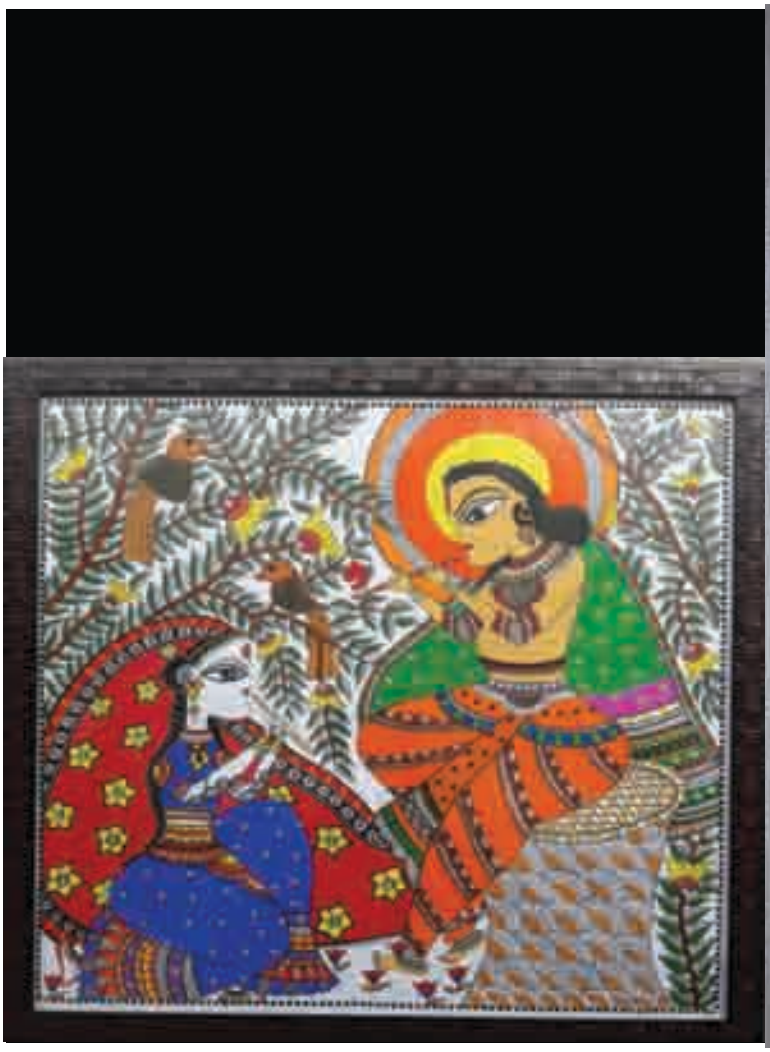

SANSKRIT SOCIETY

Women Development CELL

Physics Subject Society

PHYSICS

PAPER RECYCLING UNIT

Computer Science Society

Mathematics Subject Society

NSS ACTIVITIES

NSS Celebrate योग दिवस

ENVIRONMENTAL STUDIES

E-Cell

ENACTUS EVENTS

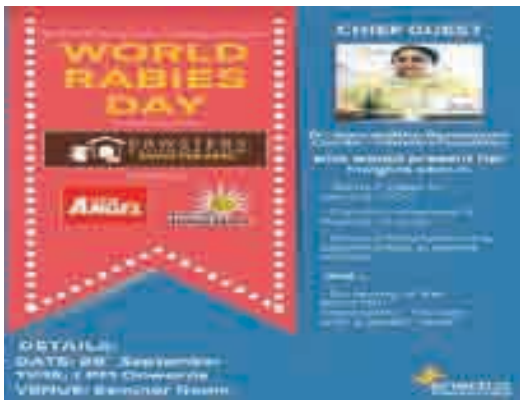

AADHAR- THE DRAMATICS SOCIETY

MALHAAR-THE MUSIC SOCIETY

ENGLISH DEPARTMENT FEST

NATIONAL SEMINAR

ANNUAL SPORTS DAY

CULTURAL SOCIETY

CHAYANIKAN

NCC ACTIVITIES

POLITICAL SCIENCE DEPARTMENT

फ़रिश्ते से बढ़ कर है इंसान बनना
मगर इस में लगती है मेहनत ज़ियादा

------ अल्ताफ़ हुसैन हाली

MOTILAL NEHRU COLLEGE

(University of Delhi)

Benito Juarez Marg, New Delhi - 110021